साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

चरण ११: २०१४-१५

हिन्दी संस्कृति सप्ताह...... पृष्ठ - 15

'हर बेटी को दुर्गा बनना होगा'......... पृष्ठ - 41

कथक कार्यशला एवं नृत्य.... पृष्ठ - 23

श्रीमती जानकी देवी बजाज.................. पृष्ठ - 68

शब्द शक्ति की आराधना के लिए

'शब्दम' ध्वनि, नाद और अर्थ तीनों का सम्मिलित रूप है। इसके व्यापक क्षेत्र के अन्तर्गत विविध साहित्य-संगीत-कला स्वत: ही आ जाते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर माँ शारदा की कृपा से १७ नवम्बर २००४ को इस संस्था (शब्दम्) का गठन शिकोहाबाद (उ.प्र.) में हुआ।

उद्देश्य

१. हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि की उच्चस्तरीय रचनाओं और नव लेखन को बढ़ावा देना तथा उपलब्ध साहित्य को जन साधारण के सामने प्रस्तुत करना।

२. विविध भारतीय ललित कलाओं, संगीत एवम् साहित्य को प्रोत्साहित करना।

३. देश विदेश में राष्ट्र भाषा हिन्दी के गौरव के लिए प्रयास करना।

४. हिन्दी को शिक्षण और बोलचाल के क्षेत्र में लोकप्रिय बनाना।

५. हिन्दी को रोजी-रोटी प्राप्त करने की भाषा बनाना तथा सब तरह के कारोबार में इसके प्रयोग को बढ़ावा देना।

६. भारत की एकता के लिए हिन्दी की सेवा करना।

सम्पर्क:

शिकोहाबादः शशिकांत, दीपक औहरी, मोहित जादोंन

शब्दम्, हिंद लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद – 283141, फोनः (05676)234018

ई–मेलः shabdamhoskb@gmail.com, pmhoskb@gmail.com

वेबसाइट– www.shabdamhindi.com

मुंबई : टचस्टोन एडवरटाइजिंग, मुंबई फोन– 022–22885114

शब्दम् न्यासी मंडल

अध्यक्ष

श्रीमती किरण बजाज

उपाध्यक्ष

प्रो. नन्दलाल पाठक

श्री उदय प्रताप सिंह

(अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान)

श्री सोम ठाकुर

वरिष्ठ सदस्य

श्री शेखर बजाज

श्री मुकुल उपाध्याय

विशिष्ट सलाहकार

श्री बालकृष्ण गुप्त

श्री उमाशंकर शर्मा

डॉ. ओमप्रकाश सिंह

डॉ. अजय कुमार आहूजा

डॉ. ध्रुवेंद्र भदौरिया

डॉ. महेश आलोक

श्री मंज़र-उल वासै

डॉ. रजनी यादव

श्री अरविंद तिवारी

विशिष्ट आमंत्रित सलाहकार

सुदीप्ता व्यास (न्यूज़ीलैण्ड)

सज्जा

टचस्टोन एडवरटाइज़िंग, मुंबई

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

अनुक्रम

अध्यक्षीय निवेदन 3

वार्षिक कार्यक्रम

नवम् ग्रामीण कवि सम्मेलन 4

शिक्षक दिवस 10

हिन्दी संस्कृति सप्ताह 15

स्थापना दिवस 19

समन्वय / प्रायोजित कार्यक्रम

कथक कार्यशाला एवं नृत्य 23

ओड़िशी कार्यशाला एवं नृत्य 27

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत 30

कथक कार्यशाला एवं नृत्य 33

सतत एवं स्थायी कार्यक्रम

महिला सशक्तिकरण

शब्दम् 'बालिका–महिला पाठशाला' 36

शब्दम् 'बालिका–महिला सिलाई केन्द्र' 39

'हर बेटी को दुर्गा बनना होगा' 41

बहन बचाओ अभियान 45

प्रश्नमंच

वर्षभर विद्यालयों में प्रश्नमंच 49

जनपदीय प्रश्नमंच (स्नातक–स्नातकोत्तर) 52

जनपदीय प्रश्नमंच (इण्टरमीडिएट) 55

जनपदीय प्रश्नमंच (स्नातक–स्नातकोत्तर) 57

विविधा

राष्ट्रप्रेम पर आधारित रचना प्रतियोगिता 60

ग्रीष्मकालीन शिविर 63

श्री कमलनयन बजाज 65

श्रीमती जानकी देवी बजाज 68

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 71

सम्मतियां / पत्र 72

अध्यक्षीय निवेदन

साहित्य संगीत और कला को समर्पित शब्दम् ने जनसेवा के पथ पर ग्यारह वर्ष पूरे कर लिए। यह एक ऐसा क्षण है, जब हमारी टीम को सिंहावलोकन करने का अवसर मिला है। पीछे मुड़कर अपनी उपलब्धियों और सीमाओं से सीखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। हमें देखना है कि पिछले वर्षों में 'हमने कितना कर्तव्य निभाया, कितना बाकी है? कितना सीखा और कितना अभी सीखना है'।

शब्दम् का सौभाग्य रहा है कि उसे हमेशा से महान विभूतियों का सहयोग और आशीर्वाद प्राप्त होता रहा है। इससे हमें प्रोत्साहन भी मिला है और हमारा आत्म विश्वास भी बढ़ा है। शब्दम् की अपनी पहचान बन गई है। लोग इसे स्नेह और आदर से याद करने लगे हैं।

''अब चमन में हमारा ठिकाना तो है।
चार तिनके सही, आशियाना तो है।''

सिंहावलोकन का यही लाभ है कि आगे के सफ़र के लिए 'करणीय' और 'अकरणीय' की शिक्षा मिल जाती है। शब्दम् एक परिवार है, सम्मिलित परिवार। इसमें सब, सबके लिए हैं। हमें भविष्य के लिए योजनाओं की रूप रेखा बनानी होगी। गति बढ़ानी होगी। गतिविधियों में व्यापकता लानी होगी। वातावरण में जो कटुता की गन्ध फैली है, उसकी जगह सुगन्ध फैलानी होगी।

ऐसा होता है कि जब राष्ट्रीय मतभेद बढ़ जाए, तब एक ऊँचे आदर्श और सदुद्देश्य को सामने रखकर निर्माण में लग जाने से आपसी मतभेद स्वयं ही विलीन हो जाते हैं। हमें सकारात्मक सोच को आगे लाना होगा जनतंत्र के सागर मन्थन से विष और अमृत दोनों निकले हैं। हमें अमृत की सहायता से विष का शमन करना होगा और वरदानों की अभिशापों से रक्षा करनी होगी।

मानव मन की सेवा के लिए हमें साहित्य संगीत और कला की सामग्री लेकर विकास के महायज्ञ में योगदान देना होगा।

किरण बजाज

वार्षिक
अनवरत कार्यक्रम

बेटियां जब चहकती हैं ....
फूलों सी महकती हैं.................

- **कार्यक्रम विषय** : नवम् ग्रामीण कवि सम्मेलन ● **दिनांक** : 17 मई 2015
- **आमंत्रित कविगण** : श्री श्यामल मजूमदार, श्री अरविन्द धवल, श्रीमती चेतना शर्मा
- **सीन** : नीम की बगिया, निजामपुर गढ़ूमा, माधौगंज, शिकोहाबाद

संयोजन : शब्दम्

शब्दम् द्वारा इस बार कवि सम्मेलन के मंच पर कवि श्री श्यामल मजूमदार (लखनऊ), श्री अरविंद धवल (बदायूं), एवं सुश्री चेतना शर्मा (आगरा) के साथ–साथ शब्दम् परिवार के सदस्य एटा से डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया, शिकोहाबाद से डॉ. महेश आलोक एंव श्री अरविंद तिवारी ने काव्य पाठ किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री उदय प्रताप सिंह, अध्यक्ष उ.प्र. हिन्दी संस्थान ने की।

हास्य व्यंग्यकार श्री श्यामल मजूमदार ने ''सियासत में यदि अंधी कमाई न होती तो चेहरे पर उनके लुनाई न होती, जो कुत्ता उनका गटर में न गिरता तो गटर की कभी सफाई न होती'' पंक्तियों से आज की राजनीति पर कटाक्ष किया। लेकिन बेटियों की रौनक से वो भी नहीं बच पाए और ''बेटियां जब चहकती हैं, फूलों सी महकती हैं'' ऐसी मर्मस्पर्शी पंक्तियों को उन्होंने अपने काव्यपाठ में जगह दी। ग्रामीण कवि सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण जनता को काव्य से परिचित कराना है और यह परिचय इस बार गांव की घूँघट वाली महिलाओं से भी हुआ जो पहली बार कवि सम्मेलन में भारी संख्या में मौजूद थीं।

शब्दम् ट्रस्टी एवं ग्रामीण कवि सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे श्री उदयप्रताप सिंह, जिन्हें

समूह छायांकन।

कवयित्री श्रीमती चेतना शर्मा का हरित कलश देकर स्वागत करतीं शब्दम् सलाहकार डॉ. रजनी यादव।

ग्राम समिति के अध्यक्ष श्री रामनरेश ने कार्यक्रम का दूल्हा कहकर संबोधित किया, ने अपने चिर परिचित अंदाज में काव्य पाठ किया। उदयप्रतापजी ने अपनी पंक्तियों में सामाजिक परिदृश्य पर प्रहार करते हुए कहा, ''फूल कली ने ज़हर खा लिया तंग हुए मँहगाई से, हँसती रही तिजोरी काली उन पर बेशर्माई से"। साथ ही उन्होंने अपने आप को सभ्य कहने वाले समाज को आइना दिखाते हुए कहा, ''सभ्य देश की ख़बरें पढ़ कर आती शर्म निगाहों पर, आजादी की लाश पड़ी है सरेआम चौराहों पर। कृष्ण बढ़ाते नहीं चीर अब द्रौपदियों की आहों पर, उल्टा पर्दा डाल रहे है नटवरलाल गुनाहों पर ।''

शब्दम् सलाहकार समिति के सदस्य एवं समकालीन हिन्दी कविता के चर्चित कवि डॉ. महेश आलोक ने उदात्त भावनाओं से प्रेरित किशोरवय में लिखे गीत ''छेड़ो प्रिय मधुर संगीत, लय हो विश्व का क्रंदन...... समाहित हो बने मृदु गीत" से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस गीत ने मंच पर उपस्थित कवियों के साथ–साथ समस्त

आभार व्यक्त करते हुए ग्राम समिति के अध्यक्ष श्री रामनरेश यादव।

सुधीजनों के मन पर अपनी अमिट छाप छोड़ी।

शब्दम् सलाहकार समिति के वरिष्ठ सदस्य एवं प्रख्यात व्यंग्यकार श्री अरविन्द तिवारी ने अपने काव्य पाठ में इस पुरुष प्रधान समाज पर निशाना साधते हुए कहा, ''पिता बड़ा ही त्यागी होता है, पुत्र के प्रति अनुरागी होता है, बाप बनने के आसार होते ही, पत्नी का कराता है अल्ट्रासाउण्ड, कन्या भ्रूण हुई तो करवा देता है अन्डरग्राउन्ड।" उपस्थित श्रोताओं ने इस कविता को पसन्द किया।

"अपनी तो सब उमर बीत गयी गिरवी और उधारी में" – श्री अरविन्द धवल की कलम से

मंच पर उपस्थित मुख्य अतिथि एवं कविगण।

निकली ये पंक्तियां किसी गाँव के बुजुर्ग की आपबीती बताती हैं। बदायूं से पधारे श्री अरविन्द धवल अपनी देसी अंदाज़ और ब्रज भाषा से गाँव वालों के काफी नज़दीक पहुंच गए। हर टूटते परिवार की कहानी को श्री धवल ने सरल भाषा से कुछ इस तरह श्रोताओं के समक्ष रखा, ''अम्मा ढुकढुक रोय रही हैं, बप्पा आज बिचारे हुइ गए, भइया आज नियारे हुइ गए''

कवयित्री सुश्री चेतना शर्मा ने लोक गीतों से उपस्थित जनता को प्रभावित किया "बलमा हमारो बड़ो प्यारो निगोड़ी महँगाई ने मारो री, महँगाई सुरसा सी ठाढ़ी, बिटिया अलग ब्याह को ठाढ़ी, बिन दहेज के छोरा मिले न कोई चोखो सुखारो री"।

मंच के सफल संचालक डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने स्त्री की रक्षा सर्वोपरि बताते हुए सीता के रक्षक जटायु और द्रोपदी चीरहरण के मूक दर्शक भीष्म पितामह की मनःस्थिति को बताते हुए कहा कि जटायु ने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए स्त्री की अस्मिता को बचाने का प्रयास किया वहीं भीष्म जैसे शूरवीर ने चीर हरण के दौरान मौन धारण किया।

इस कार्यक्रम में श्री हीरालाल यादव ने भी अपनी कविता का पाठ किया। श्री हीरालाल यादव पाँच देशों की यात्रा साइकिल से कर चुके हैं एवं कई विशिष्ट पुरस्कारों से सम्मानित किए जा चुके हैं।

शब्दम् अध्यक्ष ने अपने संदेश में कहा अधिकांश भारत आज भी गाँवों में बसता है। आज़ादी के 64 वर्ष बाद भी हमारे गाँवों का समग्र विकास नहीं हुआ है। विशेषकर सांस्कृतिक क्षेत्र में नवजागरण का स्तर अभी भी वांछनीय स्तर तक नहीं पहुँचा है। गाँव का राजनीतिकरण तो हुआ, किन्तु संतोषप्रद सांस्कृतिक उन्नयन नहीं हो पाया है। इस कमी को हमें स्वयं पूरा करना होगा। कविता मानव हृदय की संजीवनी है और हिन्दी हमारी एकता का सूत्र है। ग्रामीण कवि सम्मेलन हमारे सांस्कृतिक विकास का माध्यम बन सकता है। हम गाँव वाले हैं, किन्तु गँवार नहीं हैं। हम उन्नत विकसित ग्रामीण नागरिक हैं–

काव्यपाठ करते श्री अरविन्द धवल।

कविताओं का आनन्द लेते श्रोतागण।

यह कहने का समय आ गया है।"

ग्रामीण कवि सम्मेलन अपने उद्देश्य की पूर्ति करता हुआ नज़र आया जब श्रीमती बजाज द्वारा रचित कविता 'बिटिया' ने जनमानस के हृदय को छू लिया। आज के दौर में लड़कियों की सामाजिक स्थिति किसी से छुपी नहीं है, भ्रूण हत्या, बलात्कार एवं दहेज़ हत्याओं से प्रतिदिन अख़बार भरे रहते हैं। इन दो पंक्तियों–"घर की उजियारी, सबसे न्यारी प्यारी बिटिया, सयानी बिटिया" से मानो श्रीमती बजाज ने बेटियों की रक्षा के लिए एक आह्वान कर दिया।

इस अवसर पर शब्दम् ट्रस्टी मुम्बई से श्री नन्दलाल पाठक की कविता "नगरीय जीवन से पीड़ित हृदय की पुकार । ग्रामीण जीवन को बधाई के साथ। लुटा लुटा सा महानगर खुद, कहाँ से यह तुमको प्यार देगा? नज़र से ओझल जहाँ हुए तुम, नजर से तुमको उतार देगा।.............................. यहाँ हवाओं में विष भरा है, यहाँ है क़िस्तों में मौत आती, यहाँ शिकारी हैं सब सभी के, कोई न अपना शिकार देगा। किसी को धन का गुमान है तो गुमाँ फ़क़ीरी का है किसी को, हुआ करो तुम खुदा, नगर यह तुम्हारी हस्ती नकार देगा" का पाठ मंच से किया गया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ ज्ञानज्योति पब्लिक स्कूल की छात्राओं द्वारा सरस्वती वन्दना एवं स्वागत गीत से हुआ।

इस अवसर पर शिकोहाबाद के गण्यमान्य व्यक्ति– डॉ. ए.के. आहूजा, श्री उमाशंकर शर्मा, श्री मंजर उलवासै, डॉ. रजनी यादव, श्री राधेश्याम यादव, श्रीराम आर्या, श्री एस. एस. यादव, श्री रवीन्द्र रंजन, ग्राम समिति के सदस्य– श्री रामनरेश यादव, श्री रिंकू यादव, श्रीमहाराज सिंह, निजामपुर गढ़ूमा ग्राम प्रधान श्री उदयवीर सिंह आदि उपस्थित थे।

'आजादी का सूरज चमका दिल्ली के आकाश में...'

...गांव पड़े हैं गुलामी के पिछड़े आकाश में

शिकोहाबाद: शब्दम संस्था द्वारा ग्राम निजामपुर गढ़ूमा में नौवें ग्रामीण कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया

आजादी का सूरज चमका दिल्ली के

गलियों में लुच्चे लफंगे न होते तो कभी उमर में सगाई न

कविता

अम्मा हमैं न मारौ तुम

अंश तुम्हारी देही को हैं, समुझिन बोझ उतारौ तुम।
हमहूँ दुनिया देखिलेन देउ, अम्माँ हमैं न मारौ तुम।।
लरिका है घर को उजियारो, हम चौका–बासन वारी।
वाय पिअइयो दूध–मलाई हमैं देत रहियों गारीं।।
कहू नाय दुख दियैं तुम्हें हम, कछू न सोच विचारौ तुम।।
हमहूँ दुनिया .... ।।
कबहूँ नाय खिलौना मगिहैं और बीमार हुइहैं हम।
परे–परे टूटी खटिया पै, लत्तनु मैं बढि जइहैं हम।।
'दादी' और 'बुआ' कौ छोड़ो, हम हूँ नेक निहारौ तुम।।
हमहूँ दुनिया.. ।।
अगर कहूँ स्कूल पठइ दओ, तौ फिर कछु करि जइहैं हम।
बेदी किरन, इन्दिरा मैया बनि के तुम्हैं दिखइ हैं हम।।
नेंक करेजो कर्रो कल्लेउ, और न आँसू डारौ तुम।।
हमहूँ दुनिया... ।।
हम ऐसे ही मरत रहे तौ, लला कहाँ से ब्याहैंगे।
लला नाय ब्याहे अम्मा तौ, पूत कहाँ से आवैंगे।।
लला अकेले पूत जनि सकैं, तौ तो हमें सहारौ तुम।
हमहूँ दुनिया देखलेन देउ, अम्मा हमैं न मारौ तुम।।

परिचय

डॉ. अरविन्द 'धवल' । जन्म (30/1/1965) । शिक्षा – बी.ए.एम.एस.
उपाध्यक्ष– 'स्मृति वंदन', सा हि0 सा मा0 एवं सांस्कृतिक संस्था ।
सम्पादक – 'स्मृति वंदन', वार्षिक स्मारिका।
प्रकाशन– ग़ज़ल संग्रह– आँख का पानी और समंदर' प्रकाशनाधीन।
आकाश वाणी, दूर दर्शन से काव्य पाठ तथा विभिन्न अखिल भारतीय मंचों से काव्य पाठ।
तहसील कॉलोनी, नवादा, बदायूँ, उ0प्र0 । फोन– 08979735785, 09058331019

कविता

सूखे खेतों में फ़सल कहाँ उगती,
दो जून की रोटी मुश्किल से मिलती,
जो धरती मां के बन्दे होते हैं,
क्यों गले में उनके फंदे होते हैं,
जे देह पे मोती रोज उगाते हैं,
कौड़ी के मोल ख़रीदे जाते हैं,
ये दर्द श्रमिक का कौन उठायेगा,
सम्मान स्वेत कौन दिलाएगा,
इन प्रश्नों के अम्बार लगाता हूँ,
लो भारत मां का दर्द सुनाता हूँ।।

जो जन मत से अब चुनकर आते हैं,
क्यों परिजन पर ही ध्यान लगाते हैं,
जनता को तो खाने के लाले हैं,
वे स्वीस बैंक में अरबों डाले हैं,
क्यों राजनीति धृतराष्ट्र हुई जाती,
जनता खुद को गांधारी ही पाती,
इन प्रश्नों का हल कौन सुनाएगा
तमस से मुक्ति कौन दिलाएगा,
अब प्रश्नों पर विराम लगाता हूँ,
पर उत्तर की भी आस लगाता हूँ,
कुछ अन सुलझे मैं प्रश्न उठाता हूँ,
लो भारत मां का दर्द सुनाता हूँ।।

परिचय

श्यामल कुमार मजूमदार । वरिष्ठ सहायक

सम्प्रति राजभाषा अनुभाग, भारतीय स्टेट बैंक, एल.सी.पी.सी. लखनऊ में कार्यरत । मूलतः हास्य व्यंग्य कवि मोबाइल:09335213829, 08577876666 **काव्य यात्रा**– सब टीवी, लखनऊ/रांची/भोपाल दूरदर्शन एवं आकाशवाणी से अनेक बार काव्यपाठ प्रसारण, देश के 14 राज्यों में अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों में काव्य पाठ, आखिल भारतीय कवि सम्मेलन के मंचो पर वाचिक परम्परा के बांग्ला भाषी हिन्दी सेवक।

कविता

बलमा हमारौ बड़ो प्यारो, निगोरी महंगाई ने मारौ री
मेहनत करि के आवै साँझ कूँ घर हारौ हरौ री
मेहनत ने तन ऐसो छांटौ, सूखि सूखि के है गयो काँटौ
आम दशहरी सौ बलमा सूखि के है यौ छुआरो री

दिन भर महँगाई की चर्चा सहज चलै नाय घर कौ खर्चा
इकलौ एक कमाऊं न दीखै हमैं दूजों सहारौ री
महँगाई सुरसा सी बाढ़ी बिटिया अलग ब्याह कूं ठाड़ी
बिन दहेज के छोरा मिलै न कोऊ चोखौ सुखारौ री

मन ते कबहूं न खानौ खावै मोय दया बुहतेरी आवै
घर के सुख के ताई करत वॉपे रोजई उसारौ री

परिचय

श्रीमती चेतना शर्मा । शिक्षा– डबल एम.एम. इतिहास और राजनीति विज्ञान एवं संगीत वादन प्रभाकर

काव्य यात्रा– 27 वर्षों से निरन्तर आकाशवाणी एंव अनेकों टी. वी. चेनलों पर कविताओं का प्रसारण, अनेकानेक पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रसारण, एवं 27 वर्षों से निरन्तर काव्यपाठ।

संस्कृत के विद्वान शिक्षकों का सम्मान

- **कार्यक्रम विषय** : "शिक्षक मूलतः चरित्र निर्माता है" विषय पर संगोष्ठी एवं शिक्षकों का सम्मान
- **दिनांक** : 11 सितम्बर 2015 ● **स्थान** : धानुका गेस्टहाउस, वृंदावन
- **आमंत्रित अतिथि** : डॉ. अच्युतलाल भट्ट, डॉ. सच्चिदानंद द्विवेदी, श्री राजाराम मिश्र ● **संयोजन** : शब्दम्

शब्दम् द्वारा शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में ब्रजभूमि वृंदावन में विशिष्ट शिक्षक सम्मान समारोह मनाया गया। समारोह के अंतर्गत 'शिक्षक मूलतः चरित्र निर्माता है' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

शब्दम् द्वारा प्रत्येक वर्ष की भांति आदर्श एवं समर्पित शिक्षकों का सम्मान किया गया। इस श्रृंखला में इस वर्ष भी संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान, शिक्षकों क्रमशः श्री राजाराम मिश्र, दण्डी आश्रम वृदावन, डॉ. सच्चिदानन्द द्विवेदी, धर्मसंघ विद्यालय वृंदावन, डॉ. अच्युतलाल भट्ट को शाल, नारियल, वैजयन्ती माला, सम्मान पत्र एवं सम्मान राशि भेंट कर सम्मानित किया गया।

सम्मान समारोह में वक्तव्य देते हुए विद्वान पं. राजाराम मिश्र ने कहा "शिक्षकों का मौलिक चिंतन, चरित्र निर्माण के सम्बन्ध में कार्य करना है। वैदिक परम्परा की शिक्षा व्यवस्था ही विश्व समाज की पोषिका तथा मानव का कल्याण करने वाली विद्या है। भौतिक युग में वैदिक शिक्षा ही मार्ग दिखाएगी। हमारा जो भी लक्ष्य है, उसकी

सम्मानित शिक्षकों के साथ समूह छायांकन।

सरस्वती के चित्र पर दीप प्रज्ज्वलन करते सम्मानित शिक्षकगण।

डॉ. अच्युतलाल भट्ट का शाल पहनाकर सम्मान करते श्री उमाशंकार शर्मा।

श्री सच्चिदानन्द द्विवेदी को सम्मान पत्र भेंट करते श्री उमाशंकर शर्मा

वक्तव्य प्रस्तुत करते श्री सच्चिदानन्द द्विवेदी।

प्राप्ति में वेद मार्ग के अलावा कोई मार्ग कारगर नहीं। शिक्षक का सम्मान वस्त्र, आभूषण, धन से नहीं होता, बल्कि उसके गुणों को ग्रहण करने से होता है। छात्रों को प्रयत्नशील होना चाहिए।''

इसी क्रम में विद्वान डॉ. अत्युतलाल भट्ट ने कहा कि जो ज्ञान के लिए, समाज के लिए और मूल्यों के लिए समर्पित हो, वही मूलतः शिक्षक है। समाज का कर्तव्य है कि वह विद्या और ज्ञान को महती चेतना के प्रति समर्पित करे। संस्था किसी विचार का प्रतीक होती है, वह मकान का ढाँचा नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य जीवन को ज्ञानमय और आनन्दमय बनाना है। अध्यापक का मूल कर्तव्य शिष्य के जीवन को शिक्षा से जोड़ते हुए उसे ज्ञानमय और चरित्रवान बनाना है। विद्यार्थी अपने ज्ञान से यह जान सके कि सत्य और असत्य क्या है। और उसकी खोज स्वयं करे। अध्यापक का यह कर्तव्य है कि वह विद्यार्थियों में विश्लेषण करने की क्षमता उत्पन्न करे।

इस क्रम में संस्कृत के विद्वान सच्चिदानन्द द्विवेदी ने कहा कि जब डा. राधाकृष्णनन शिक्षक का पद छोड़कर राष्ट्रपति हो गए, तब शिक्षक का सम्मान कहां हुआ, शिक्षक का सम्मान तो तब है, जब एक व्यक्ति राष्ट्रपति का पद छोड़कर शिक्षक बन जाये।

इस अवसर पर शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज ने अपने संदेश में कहा ''आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्र में पश्चिमी जगत ने जो

महान उपलब्धियाँ प्राप्त कर ली हैं, उनका जवाब नहीं, लेकिन नैतिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में भारत ने जो आदर्श और उदाहरण प्रस्तुत कर दिये थे, उनकी समानता आज भी पश्चिम नहीं कर सका है। इसका सारा श्रेय हमारी शिक्षा प्रणाली को था। प्राचीन भारत में एक ओर तक्षशिला, नालन्दा जैसे महान विश्वविद्यालय थे, अन्नामलाई जैसे शिक्षण संस्थान, तो दूसरी ओर भद्र ऋषियों के गुरुकुल थे। इनका संचालन सरकार द्वारा नहीं, आचार्यों द्वारा होता था। 'आचार्य' का अर्थ है – वह शिक्षक जिसका जीवन, जिसका 'आचरण' व्यवहार में उतारने योग्य हो। शिक्षक अपने आचरण से आचार्य बनता था। पूरब और पश्चिम के शिक्षण का अन्तर यही है कि पश्चिम की प्रगति ने हमें दो महायुद्ध दिये और भारतीय शिक्षण ने वे सन्देश, जिनसे मनुष्य बनता है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'सत्यमेव जयते', 'विश्व का कल्याण'–यह सब भारतीय शिक्षा के आदर्श हैं।''

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री उमाशंकर शर्मा ने कहा कि शब्दम् की ओर से शिक्षकों का सम्मान एवं इन विद्वानों ने अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत कर हमारा मार्गदर्शन किया है।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. महेश आलोक, हिन्दी विभागाध्यक्ष नारायण महाविद्यालय, शिकोहाबाद ने किया। शिक्षक सम्मान समारोह में दण्डी आश्रम, धर्मसंघ विद्यालयों के छात्र एवं अध्यापकगण उपस्थित रहे।

शब्दम् सलाहकार समिति के साथ समूह छायांकन।

संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं नगर के गण्यमान्य अतिथि।

संस्कृत विद्यालय के छात्रों के साथ समूह छायांकन।

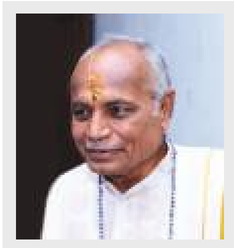

डॉ. अच्युतलाल भट्ट

शिक्षा: आगरा विश्वविद्यालय से एम.ए. (हिन्दी), पी–एच. डी. साहित्य शास्त्री, साहित्य रत्न, डी. लिट्

अध्यापन: रंगलक्ष्मी संस्कृत महाविद्यालय, वृंदावन में उपप्रधानाचार्य पर 1965–1969, चम्पा अग्रवाल कालेज, मथुरा में हिन्दी विभागाध्यक्ष 1969–2003

ग्रन्थलेखन :

1. श्रीरूप गोस्वामी और उनका काव्य–साहित्य तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन
2. संदर्भसार–श्रीजीव गोस्वामी कृत भागवत–संदर्भ का सानुवाद संक्षेप
3. गोविन्दलीलामृत चषक (भूमिका एवं सम्पादन)
4. विभिन्न पत्रिकाओं में अनेक शोधपूर्ण लेख
5. श्री भक्तिरसामृत सिंधु की दुर्गम संगमिनि एवं भक्तिसार दर्शन टीकाओं का अनुवाद
6. अष्टछाप सागर भाग 1–2
7. लीला विलास माधुरी – श्रीरूपसिक गोविन्द कृत
8. तैतरीय नित्यकर्म पद्धति

सम्पादन: श्री नित्यानन्दजी भट्ट द्वारा लिखित समस्त साहित्य का सम्पादन, चम्पा अग्रवाल कॉलेज पत्रिका के प्रधान–सम्पादक

संतकृपा:

1. बाबा चंद्रशेखर दास जी महाराज–वृन्दावन की सान्निध्य में अनेकों आचार्य–रसग्रंथों एवं श्रीमद्भागवत की प्रमुख मूल टीकाओं का 25 वर्षों तक निरंतर नित्य निष्काम प्रवचन एवं उनसे अनेक गढ़ रहस्यों की प्राप्ति।
2. पूज्य श्रीबालकृष्णदास जी महाराज का विशेष अनुग्रह एवं उनके लीला प्रवेश के 15 दिन पूर्व उन्हें सप्ताह श्रवण कराया।
3. सभी संत प्रवर–प्रमुखतः श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी, श्रीआनंदमयी मां, श्रीअखण्डानन्द सरस्वती श्रीजगद्गुरु शंकराचार्य श्रीनिश्चलानंद सरस्वती जी महाराज पुरी पीठाधीश्वर आदि से कृपा प्राप्त।

अध्ययन:

1. निज पितृचरण श्री नित्यादनंद भट्ट जी से श्रीमद्भागवत का विधिवत् अध्ययन।
2. विद्वत् प्रवर श्रीगोपीनाथ जी उपाध्याय से कर्मकाण्ड का अध्ययन।

श्री राजाराम मिश्र

जन्म : 10 नवम्बर 1939

प्रारम्भिक शिक्षा फतेहपुर में ।

बाबा भी अध्यापक थे एवं संस्कृत शिक्षण कार्य में लगे हुए थे। बनारस विश्वविद्यालय से व्याकरणाचार्य, वेदान्त, दर्शन का अध्ययन

शिक्षण का प्रारम्भ हरिद्वार से किया जहाँ 8 वर्षों तक शिक्षण कार्य किया।

1979 से वृंदावन में, संस्कृत पाठशाला जो कि केन्द्रीय विद्यालय के अधीन है कार्य किया।

वर्तमान में दण्डी आश्रम, वृंदावन में 2 घण्टे संस्कृत शिक्षा देते हैं।

वर्तमान में रामायण, महाभारत और श्रीमद्भावत के वेद मार्ग को समझने के लिए उसपर निबन्ध लिख रहे हैं।

> "मैं इस निष्कर्श पर पहुंचा हूँ कि एक महान शिक्षक एक महान कलाकार होता है, और महान कलाकारों की तरह उनकी संख्या भी कम है। बल्कि शिक्षा प्रदान करना महानतम कला है, क्योंकि उसका माध्यम है, मानव मस्तिष्क और मानव मन।
>
> -जॉन स्टीनबेक"

श्री सच्चिदानंद द्विवेदी

जन्मः लगभग 68 वर्ष पूर्व पूर्वी उत्तर प्रदेश के गोरखपर जिले के सुदूर गाँव में हुआ था।

पिता राजवंशी द्विवेदी जी करपात्री जी महाराज से बड़े प्रभावित थे। करपात्री जी महाराज ने ब्राह्मणों का आह्वान किया थाः कि वे सरकारी नौकरी न करें उनकी बात मानकर श्री राजवंशी द्विवेदी जी ने सरकारी नौकरी करने का विचार छोड़ दिया और करपात्री जी के द्वारा सीापित धर्मसंघ विद्यालयों में पहले भिवानी फिर दिल्ली और फिर वृंदावन में आ गऐ। इस पूरे संक्रमण में ज्येष्ठ पुत्र सच्चिदानंद उनके साथ थे। धर्मसंघ विद्यालय वृंदावन में आगमन के समय सच्चिदानंद की उम्र दो वर्ष के लगभग रही होगी। उस समय विद्यालय के संस्थापक श्री गजानन धानुका और राधाकृष्ण धानुका विद्यमान थे। तब से लगभग 30 वर्षों का समय यहीं इसी विद्यालय में अध्ययन करते हुए बिताया।

सारी शिक्षा अक्षर ज्ञान से लेकर आचार्य पर्यन्त पूज्यपितृ चरणों में बैठकर ही प्राप्त की इसलिए वहीं एक मात्र गुरु जीवन भर रहे। इसके बाद दिल्ली विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. करने के उपरान्त शारदा पीठ कालेज द्वारिका में संस्कृति विभाग के अध्यक्ष पद पर नियुक्ति हो गई वहीं रहते हुए इन्होंने सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी से जीवगोस्वामी के हरि नामामृत व्याकरण पर एक शोध प्रबन्ध लिखा जिसके ऊपर उन्होंने सौराष्ट्र विश्वविद्यालय से पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त हुई। संम्प्रति अपना कार्य–काल पूरा कर सेवा निवृत्त होकर वृंदावन वास कर रहे हैं।

द्विवेदी जी पूरी तरह से करपात्री जी के विचारों से प्रभावित हैं और अपने जीवन में उन्हीं का अनुसरण करने का पूरा प्रयत्न करते हैं।

शिक्षकों को करना होगा चरित्र निर्माण

शब्दम ने ब्रज के शिक्षकों का किया सम्मान

वृन्दावन। साहित्यिक संस्था शब्दम ने धानुका आश्रम में विशिष्ट शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया। जिसमें संस्था ने शिक्षकों के सम्मान के साथ शिक्षक मूलतः चरित्र निर्माता हैं विषय पर विचार मंथन किया।

शिकोहाबाद में शब्दम द्वारा आयोजित किए गए कार्यक्रम में मौजूद विशिष्ट लोग।

हिन्दी दिवस

- **कार्यक्रम विषय** : हिन्दी दिवस
- **दिनांक** : 18 सितम्बर 2015
- **स्थान** : संस्कृति भवन, हिन्दलैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद
- **मंचासीन** : डा. महेश आलोक (मुख्य अतिथि), श्री मंज़र–उल वासै **संयोजन** : शब्दम्

''मेरे पोते ने इण्टरमीडिएट में 95 नम्बर प्राप्त किए हैं, हाईस्कूल में भी हिन्दी विषय में 95 नम्बर प्राप्त किए थे'', बताते हुए आर्यन के दादा जी का सीना गर्व से फूल गया। रोहितकुमार अपनी माताजी के साथ मंच पर पहुंचे, जब रोहितकुमार अपना पुरस्कार प्राप्त कर रहे थे इस समय उनकी मां के चेहरे पर संतुष्टि के भाव आसानी से पढ़े जा सकते थे। उन्होंने रोहित को इस सफलता तक लाने के लिए अथक प्रयास किये थे। ऐसे 104 विद्यार्थी शब्दम् द्वारा आयोजित ''छात्र–सम्मान समारोह ''कार्यक्रम में उपस्थित हुए और परिजन एवं गुरुजनों की उपस्थिति में अपना सम्मान ग्रहण किया।

'शब्दम्' के वार्षिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में वर्ष 2015 हिन्दी दिवस पखवाड़ा के अन्तर्गत सम्मान समारोह कार्यक्रम आयोजित किया गया। सम्मानित होने वाले छात्रों में इण्टरमीडिएट और स्नातक, स्नातकोत्तर कक्षाओं के ऐसे छात्र–छात्राएं थे, जिनके हिन्दी विषय में इण्टरमीडिएट में 80 प्रतिशत व स्नातक, स्नातकोत्तर में 65 प्रतिशत या उससे अधिक अंक थे।

कार्यक्रम में छात्र–छात्राओं का उत्साह शीर्ष पर था। हिन्दी के लिए सम्मान प्राप्त करने

सलाहकार समिति एवं शिक्षकगण।

सम्मान प्राप्त करते श्री दिनेश बैजल।

सम्मान प्राप्त करते श्री राजेश द्विवेदी।

पर सभी छात्र–छात्राओं के चेहरे पर हर्ष उल्लास और गौरव का भाव स्पष्ट था और उनके शिक्षक भी, खुद को गौरवान्वित अनुभव कर रहे थे।

इस वर्ष संस्था ने हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र से श्री राजेश द्विवेदी (पत्रकार दैनिक जागरण) का सम्मान किया जिनकी लेखनी पिछले 33 वर्षों से पाठकों को आंदोलित करती रही है। वह सामाजिक संगठनों से जुड़कर देशसेवा का कार्य करते रहे हैं। श्री दिनेश बैजल (पत्रकार अमर उजाला) को भी सम्मानित किया जो हिन्दी पत्रकारिता के साथ पिछले 30 वर्षों से जुड़े हुए हैं और कई मासिक पत्रिकाओं, बालसाहित्य में भी लेखन का कार्य करते रहे हैं। श्री मुकेश गुप्ता (मून चैनल) को पिछले 9 वर्षों से हिन्दी रिपोर्टिंग में उनके योगदान को देखते हुए संस्था द्वारा सम्मानित किया गया ।

व्यावसायिक क्षेत्र की कम्पनी हिन्दलैम्प्स से श्री श्यामकृष्ण शर्मा एवं श्री राजकिशोर सिंह को भी सम्मानित किया गया। श्री श्यामकृष्ण शर्मा तकनीकि क्षेत्र से जुड़े होते हुए भी हिन्दी साहित्य में गहरी रुचि रखते हैं। शिकोहाबाद स्पिकमैके चैप्टर में भी इनकी महती भूमिका है। श्री राजकिशोर सिंह हिन्दी टंकण और हिन्दी पत्र ड्राफ़्टिंग में विशेषज्ञता रखते हैं।

सम्मान प्राप्त करते श्री मुकेश गुप्ता।

सम्मान प्राप्त करते श्री श्यामकृष्ण शर्मा।

छात्र सम्मान कार्यक्रम के साथ "हिन्दी रोजगारपरक भाषा कैसे बने ?" विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें कई छात्रों ने अपने विचार रखे। जवाहर नवोदय विद्यालय गुरैया सोयलपुर की छात्रा कु. कल्पना ने हिन्दी को तकनीकी ज्ञान से जोड़ने पर बल दिया। ठा. तारासिंह इण्टर कालेज के शिक्षक श्री राजेन्द्र सिंह ने कहा कि हिन्दी क्षेत्र में विकास की बात करना ही अपने आप में एक शर्म का विषय है।

श्री श्यामकृष्ण शर्मा ने कहा कि हिन्दी में कई तकनीकी शब्द हैं जो आज हिन्दी कोश में उपलब्ध नही हैं। आवश्यकता है कि हिन्दी उन्हें अपने शब्दकोश में दूसरी भाषाओं से लेकर सम्मिलित करे। श्री दिनेश बैजल एवं श्री राजेश द्विवेदी ने भी हिन्दी को रोजगारपरक भाषा बनाने की दिशा में अपने सुझाव व्यक्त किए। श्री अरविन्द तिवारी ने कहा कि सर्वप्रथम परिवर्तन अपने परिवार से

सम्मानप्राप्त करते श्री राजकिशोर सिंह

लाना होगा। आज भी जब हमारे घर में कोई अतिथि आता है तो हम बच्चे को एक अंग्रेजी कविता सुनाने को कहते हैं न कि श्लोक या हिन्दी में कविता। हमें मानसिकता बदलनी होगी। आनेवाला समय हिन्दी का है क्योंकि बहुत सी कम्पनियां व्यापार हेतु भारत में आ रही हैं, इसके लिए वे लोग हिन्दी भाषा सीख रहे हैं।

प्रो नंदलाल पाठक ने मुम्बई से दिए अपने संदेश में कहा कि मेरा सभागार में उपस्थित सभी विद्यार्थियों से अनुरोध है कि हिन्दी की नहीं, हिन्दी में बात करो। उपदेश देने वाले

सभागार का पीछे से दृश्य

बहुत हैं, उसका उपयोग करने वाले नहीं है। कार्यक्रम के प्रारम्भ में शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने अपने संदेश में कहा ''हमारा अनुरोध है हिन्दी की साक्षरता के लिए कम से कम एक निरक्षर को हिन्दी में साक्षर बनाएं।''

मुख्य अतिथि डा. महेश आलोक ने कहा कि हिन्दी में रोज़गार की सम्भावनाएँ सबसे अधिक हैं। हमें हिन्दी को बाज़ार की भाषा नहीं बनाना है बल्कि बाज़ार को इस स्थिति में लाकर खड़ा कर देना है जिससे वह हिन्दी का अनुगामी बने।

कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए श्री मंज़र–उल वासै ने सभी छात्रों को बधाई दी एवं उनके आने वाले भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दीं।

विद्यार्थी एवं शिक्षकगण।

एकता के सूत्र में पिरोने का काम करती है हिंदी

104 छात्र-छात्राओं का सम्मान

हिंदी का प्रयोग करना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार

छात्र-छात्राओं को किया सम्मानित

'शब्दम्' ग्यारहवां स्थापना दिवस समारोह

- **कार्यक्रम विषय :** स्थापना दिवस समारोह
- **दिनांक :** 17 नवम्बर 2015
- **स्थान :** संस्कृति भवन, हिन्दलैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद
- **हिन्दी सेवी सम्मान :** श्री उदयप्रताप सिंह

शब्दम् ने अपने ग्यारहवें स्थापना दिवस पर उ.प्र. हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री उदयप्रताप सिंह को 'हिन्दी सेवी सम्मान–2015' से सम्मानित करते हुए सम्मान पत्र, अंगवस्त्रम्, श्रीफल एवं सम्मान राशि प्रदान की।

श्री उयप्रताप सिंह ने साहित्य प्रेमियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज संकीर्णता को छोड़कर हिन्दी व उर्दू को एक भाषा मानकर अपनाना होगा। यह दोनों साथ–साथ पली हैं। मातृभाषा में काम करते

हुए भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए भारतीय जीवनशैली को अपनाना होगा। अंग्रेजी पब्लिक स्कूल एवं अंग्रेजियत को महत्त्व दिए जाने से कई विद्रूपताएं समाज में देखने को मिल रही हैं। उ.प्र. हिंदी संस्थान, साहित्यकारों के सम्मान एवं मदद का कार्य कर रहा है। पब्लिक स्कूलों की फीस एवं अंग्रेजी जीवनशैली पर तीखा प्रहार करते हुए

सम्मानपत्र के साथ श्री उदयप्रताप सिंह।

उन्होंने कहा कि हम झोंपड़ी वाले स्कूल में इकन्नी की फ़ीस पर पढ़े हैं। विदेश भ्रमण के दौरान कहीं बच्चों को टाई बाँधे नहीं देखा है, लेकिन गली–मुहल्लों में खुले स्कूल टाई पहना रहे हैं।

उन्होंने कहा कि संविधान में राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक न्याय देने की बात लिखी गई है, लेकिन आज भी 15 फ़ीसदी अंग्रेजी जानने वाले लोग सरकारी नौकरी में काबिज़ हैं। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के चलते सभी अदालतों में न्याय अंग्रेज़ी में लिखे जाते हैं। भारतीय पासपोर्ट एवं वीजा भी अंग्रेज़ी में लिखा जाता है, जब कि अन्य देशों में ऐसा नहीं है।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि एवं बजाज इलेक्ट्रिकल्स के सीएमडी श्री शेखर बजाज ने कहा कि हमारी कंपनी की बैलेंसशीट का काम हिन्दी एवं अंग्रेज़ी, दोनों भाषा में किया जाता है। हिन्दी की प्रगति के लिए औद्योगिक घरानों के साथ–साथ स्वयंसेवी संस्थाओं को भी आगे आना होगा।

शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने मुम्बई से भेजे अपने संदेश में कहा कि हमें हिन्दी को

वृक्षारोपण करते श्री उदयप्रताप सिंह एवं श्री शेखर बजाज।

रोज़गार से जोड़ना होगा और रोज़गार से जुड़े ज्ञान को हिन्दी में मुहैया कराना होगा, जिससे हिन्दी का प्रचार स्वतः ही होगा। विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों की अच्छी पुस्तकें और अच्छे अध्यापक उपलब्ध कराने होंगे।

शब्दम् समन्वयक ने ग्यारहवें स्थापना दिवस पर समारोह में उपस्थित विद्‌वज्जन को ''शब्दम्– एक यात्रा, 2004–2015' पॉवर पोइन्ट प्रेज़ेंटेशन दिया, जिसमें शब्दम् द्वारा संचालित सभी गतिविधियों के बारे में बताया गया।

प्रो. नन्दलाल पाठक ने अपने संदेश में कहा

कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्य।

सभा को सम्बोधित करते श्री शेखर बजाज।

''भाषा का प्रयोग सब करते हैं, भाषा पर ध्यान कोई नहीं देता। हिन्दी का एक स्वाभाविक रूप, नदी में किसी टुकड़े के 'बहने' का हो सकता है, इस बहने को तैरने में बदलने के लिए सरकारी प्रयास ज़रूरी होगा।''

श्री मुकुल उपाध्याय ने अपने संदेश में कहा ''शब्दम् उन गिनीचुनी संस्थाओं में से है, जो स्वप्रचार से परे, हिन्दी भाषा व साहित्य के प्रसार–प्रचार में सतत योगदान दे रही है।''

कार्यक्रम का संचालन डॉ. महेश आलोक ने बड़े रोचक ढंग से किया। शब्दम् की ओर से धन्यवाद डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने दिया। कार्यक्रम में डॉ. ए.के. आहूजा, मंज़र–उल वासै, अरविन्द तिवारी, डा. रजनी यादव, सुकेश यादव, डॉ. वाई. सी. पालीवाल ने उपस्थित होकर अपनी –अपनी सहभागिता दी।

वृक्षारोपण के पश्चात् समूह छायांकन।

समूह छायांकन।

श्री उदयप्रताप सिंह का परिचय

वर्तमान में उ.प्र. हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष। सुप्रसिद्ध कवि, लेखक, लोकसभा, राज्यसभा एवं राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के पूर्व सदस्य। सांसद के रूप में भारत सरकार की विभिन्न राजभाषा समितियों के सदस्य। 1993 में तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन में भारतीय दल के अध्यक्ष तथा 'पेरामारीबू' विश्वविद्यालय द्वारा आचार्य की मानद उपाधि। आगरा विश्वविद्यालय से एलुमिनियाई पुरस्कार एवं जागृत मतदाता मंच, बनारस द्वारा राजनैतिक एवं नागरिक जीवन में शुचिता के लिए पुरस्कार, शिवमंगल सिंह सुमन, ब्रजविभूषण, शायरेयकमजहती आदि पुरस्कारों से सम्मानित। उ.प्र. सरकार के प्रतिष्ठित सम्मान 'यश भारती' एवं' साहित्य शिरोमणि' से सम्मानित। विश्व के 18 देशों में हिन्दी का प्रचार–प्रसार।

राष्ट्रीय विचारधारा के उद्घोषक कवि। भाषा, कथन और शैली विचारपरक एवं बोलचाल तथा अपनापन लिए हुए हिन्दी ग़ज़ल के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर।

प्रवक्ता एवं प्राचार्य के पद पर कार्य करते हुए एक आदर्श शिक्षक के रूप में ख्याति । छात्रों में नैतिक मूल्यों का संवर्धन एवं अनुशासनप्रियता का संचालन। स्वभाव मधुर एवं आकर्षक। राजनीति के क्षेत्र में दलगत सीमाओं को तोड़कर प्रत्येक दल के राजनेता व्यक्तिगत

हिंदी का भविष्य बहुत सुनहरा: उदय प्रताप

अमर उजाला ब्यूरो

शिकोहाबाद। संस्कृति भवन हिंद परिसर में शब्दम द्वारा 11 वां स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष उदय प्रताप सिंह को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर 'हिंदी का भविष्य दशा और दिशा' विषय पर व्याख्यानशाला का आयोजन किया गया। इसमें वक्ताओं ने हिंदी के भविष्य पर विचार रखे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता उमाशंकर शर्मा ने की विशिष्ट

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष उदयप्रताप सिंह को सम्मानित करते शेखर बजाज व अन्य।

हिन्दी का भविष्य बहुत उज्ज्वल : उदय प्रताप

शब्दम् ने स्थापना दिवस पर सम्मानित किए हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष

हिन्दी का पुराना गौरव लौटेगा: उदयप्रताप

शिकोहाबाद। शब्दम् ... साहित्य-संगीत-कला को समर्पित संस्था ने अपने 11 वें स्थापना दिवस के अवसर पर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष उदयप्रताप सिंह का सम्मान करने का निर्णय लिया है। इस कार्यक्रम में उदयप्रताप सिंह "हिन्दी का भविष्य : दशा और दिशा" विषय पर अपने विचार भी व्यक्त करेंगे।

यह कार्यक्रम 17 नवम्बर को हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन में सायं 04 बजे से आयोजित किया जाएगा। सभी साहित्य प्रेमियों से अनुरोध है कि इस आयोजन में समय से पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें। आयोजन में शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज एवं बजाज इलेक्ट्रिकल्स के चेयरमैन शेखर बजाज भी उपस्थित रहेंगे।

...ने 11वें ... श हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष उदयप्रताप सिंह का सम्मान करने का निर्णय लिया है। कार्यक्रम में उदयप्रताप सिंह हिन्दी का भविष्य दशा और दिशा विषय पर अपने विचार भी व्यक्त करेंगे। कार्यक्रम 17 नवंबर को हिन्द लैंम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन में शाम 4 बजे से होगा। आयोजन में शब्दम अध्यक्ष किरण बजाज एवं बजाज इलेक्ट्रिकल्स के चेयरमैन एवं उद्योगपति शेखर बजाज भी उपस्थित रहेंगे।

"होली के खिवइया कैसे बन आयो रे"

- **कार्यक्रम विषय** : नृत्यांगना रानी ख़ानम की प्रस्तुति
  महिला दिवस के उपलक्ष्य में महिला चिकित्सकों का सम्मान
- **दिनांक** : 3 मार्च 2015 • **स्थान** : संस्कृति भवन, हिन्द लैम्प्स परिसर
- **संयोजन** : स्पिक मैके चैप्टर शिकोहाबाद एवं शब्दम्

'शब्दम्' एवं सहयोगी संस्था 'स्पिक मैके' के संयुक्त तत्वावधान में महिला दिवस और होली के शुभ अवसर पर पं. बिरजू महाराज की शिष्या, कथक नृत्यांगना सुश्री रानी ख़ानम के नृत्य का आयोजन करवाया गया एवं शिकोहाबाद शहर की महिला चिकित्सकों को भी सम्मानित किया गया।

रानी ख़ानम भारत की जानी मानी कथक कलाकार हैं। लखनऊ घराने की नृत्य कला को समर्पित रानी ख़ानम पिछले 15 वर्षों से श्री बिरजू महाराज और रेबा विद्यार्थी से नृत्य की शिक्षा ले रही हैं। देश विदेश में प्रतिवर्ष कार्यक्रम करने वाली रानी ख़ानम को सूफी कलामों में बेहद रुचि है। अपने आत्मविश्वास और साहस की वजह से नृत्य को एक नया आयाम देने वाली रानी ख़ानम पहली मुस्लिम नृत्यांगना हैं जो इस्लामी आयतों, सूफ़ी कलामों एवं सूफी काव्यों पर नृत्य करती हैं।

दुनिया भर से पुरस्कार एवं सराहना बटोरने के बाद रानी ख़ानम आम एकेडमी में नृत्य का प्रशिक्षण दे रही हैं।

सुश्री ख़ानम ने गणपति वंदना के साथ अपने नृत्य की शुरुआत की। उन्होंने सभागार में मौजूद लोगों को मुद्राओं के विषय में

महिला दिवस पर रानी ख़ानम् के साथ समूह छायांकन।

नृत्य प्रस्तुत करतीं रानी ख़ानम।

जानकारी दी कि किस तरह शरीर के विभिन्न अंग बिना बोले ही भाव के द्वारा सब कुछ कह जाते हैं। लखनऊ घराने के कत्थक में भाव की अहम् भूमिका है।

रानी जी ने अपने नृत्य के माध्यम से राधा–कृष्ण की होली प्रसंग और नींद से जागी नायिका के बारिश की बूँदों से खेलने के भाव का ऐसा सजीव चित्रण किया कि सभागार तालियों से गूँज उठा।

मंत्रमुग्ध समुदाय को उन्होंने कुछ इस तरह अपने कला कौशल से बाँधा कि समय बीत जाने का पता ही नहीं चला।

डॉ. नेहा को महिला दिवस के अवसर पर शब्दम् सम्मान पत्र भेंट करते दीपक औहरी।

इस सुअवसर पर शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने होली पर्व से जुड़ी पौराणिक कथा भक्त प्रह्लाद और हिरण्यकश्यप का उदाहरण देते हुए कहा कि अन्याय, असत्य, हिंसा और सत्ता के मद से चूर राजा का सत्य, प्रेम और अहिंसा के मार्ग पर चलने वाले प्रह्लाद द्वारा नाश कर दिया गया। श्रीमती बजाज ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के मौक़े पर महिलाओं के साथ होने वाले अत्याचारों के कारण उठने वाली वेदना को सभी के साथ साझा किया।

बी.डी.एम.म्यू कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय में समूह छायांकन।

नृत्य का आनंद लेते श्रोतागण।

महिला चिकित्सकों का उदाहरण देते हुए श्रीमती बजाज ने कहा कि यदि अवसर मिले तो मुट्ठी भर महिलाएं भी देश का नाम रोशन कर सकती हैं।

यह प्रथम अवसर था जब 'शब्दम्' ने महिला दिवस पर महिला चिकित्सकों का सम्मान किया। उत्तर प्रदेश में महिलाओं की वर्तमान स्थिति के विषय में ज़्यादातर चिकित्सकों का मानना था कि स्त्रियों को अपनी स्थिति स्वयं सुधारनी होगी। साथ ही साथ शिक्षा के साथ रोजगार हेतु प्रशिक्षण भी लेने होंगे। सभी चिकित्सकों का यह मानना था कि सरकारी

डॉ. संगीता माथुर को हरित कलश भेंटकर स्वागत करतीं किरण बजाज।

स्तर पर प्रसूति के समय नियुक्त आशाओं को और अधिक प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है।

समारोह में प्राचार्य डॉ. कान्ता श्रीवास्तव, महिला चिकित्सकों डॉ. रुचि अग्रवाल, डॉ. दीपाली अग्रवाल, डॉ. संगीता माथुर, डॉ. लीना गुप्ता, डॉ. सीमा अग्रवाल, डॉ. राधा सिंघल, डॉ. विमला शर्मा, डॉ. विमला कपूर, डॉ. नेहा ने कला के क्षेत्र से जुड़ी रानी ख़ानम का सम्मान किया। इस प्रकार यह कार्यक्रम सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ।

रानी खानम का परिचय

रानी खानम के घुँघुरूओं की झंकार अतुलनीय है. अपने नृत्य के माध्यम से देश विदेश में भारत का परचम लहराने वाली रानी ख़ानम को अनेकों अवॉर्ड्स से सम्मानित किया गया है जैसे फ़िफ्थ वोमॅन एक्सलेंस अवॉर्ड 2012, एशियन कल्चरल कॉउंसिल फेलोशिप इत्यादि. पिछले 20 वर्षों से रानी ख़ानम विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समारोहों में अपना नृत्य प्रदर्शन करती आ रही हैं।

रानी ख़ानम केवल एक बेहतरीन कलाकार हैं अपितु इस्लामिक आयतों पर नृत्य करने वाली पहली नृत्यांगना भी हैं।

रानी ख़ानम आज के समय में लखनऊ घराने की जानी मानी नृत्यांगना हैं. जिन्होंने देश–विदेश में भारत का प्रतिनिधित्व किया है. उनका अंदाज़ नृत्य परंपरा की गहन समझ को दर्शाता है. उनके नृत्य ने कला के क्षेत्र में नये आयाम स्थापित किए है एवं युवाओं के लिए यह प्रेरणा स्रोत हैं, एक सशक्त एवं कल्पनाशील नृत्यांगना होते हुए, रानी ख़ानम अभिनय मुद्रा एवं नृत्य मुद्रा दोनों में लुभावनी तकनीक दर्शाती है।

छात्राओं ने देखी रानी की कथक प्रस्तुति

कथक नृत्यांगना रानी खानम ने समझाए नृत्य के गुर

सूफी तरानों पर सजा घुंघरूओं का राग

'होली के खिवइया कैसे बन आया रे...'

रानी खानम के कथक नृत्य से झूमे दर्शक

सूफी तरानों पर सजा घुंघरुओं का राग

रानी खानम के कथक पर तालियों से गूंजा सभागार

पेंटिंग : गीतिका बजाज

> "साहस, त्याग, दृढ़ता, निष्ठा,
> सहृदयता, प्रतिभा इन तत्वों का
> मेल है एक बालिका ।"
>
> – बीथनी हेमिल्टन

ओडिसी नृत्यांगना गीतांजली आचार्य की प्रस्तुति

- **कार्यक्रम विषय** : ओडिसी नृत्य प्रदर्शन एवं कार्यशाला
- **दिनांक** : 10 अगस्त से 12 अगस्त 2015 • **स्थान** : कोसी, छाता, वृंदावन, गोवर्धन, बरसाना, राधारानी दरबार
- **आमंत्रित कलाकार** : श्रीमती गीताजंली आचार्य एवं सहयोगी तपन
- **संयोजन** : स्पिक मैके चेप्टर, शिकोहाबाद एवं शब्दम्

कृष्ण की बाल लीलाओं के साक्ष्य को अपनी गोद में संजोकर ब्रज क्षेत्र के 7 महाविद्यालयों/विद्यालयों में भारत की ओडिसी नृत्य की एक पारंगत नृत्यागंना गीताजंली आचार्य द्वारा ओडिसी नृत्य की प्रस्तुति दी गई।

शब्दम् एवं स्पिक मैके चेप्टर शिकोहाबाद के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित वर्ष के दूसरे चरण में दिनांक 10 अगस्त से 12 अगस्त 2015 तक ब्रज क्षेत्र में कोसी के सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज, नगर पालिका बालिका इण्टर कॉलेज, छाता के श्री जी इण्टरनेशनल स्कूल, वृंदावन के हजारीमलण सोमाणी नगर पालिका इण्टर कॉलेज, हनुमान प्रसाद धानुका बालिका सरस्वती विद्या मन्दिर, दानघाटी, गोवर्धन स्थित श्री मुरारी कुंज सरस्वती विद्या मन्दिर, बरसाना के राधा बिहारी इण्टर कॉलेज एवं राधा रानी मंदिर के प्रागंण में गीताजंली आचार्य ने स्कूली बच्चों के मध्य नृत्य की विभिन्न कलाओं का प्रदर्शन एवं कार्यशाला का आयोजन किया।

उपर्युक्त सभी विद्यालयों में आयोजित ओडिसी नृत्य प्रदर्शन कार्यशाला में सभी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं को मंच पर बुलाकर गीताजंली आचार्य ने ओडिसी नृत्य की बारीकियों का अभ्यास कराया। जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साह पूर्वक अपनी प्रतिभागिता दी।

गीताजंली आचार्य ने गोवर्धन, कालिया दहन,

नृत्य कार्यशाला में नृत्यागंना के साथ ताल से ताल मिलाती छात्राएँ।

नृत्य की भावपूर्ण प्रस्तुति।

नृत्य कार्यशाला में छात्राओं की सहभागिता।

विश्व रूप दर्शन और पूतना वध आदि विद्याओं का छात्र–छात्राओं के मध्य प्रस्तुत कर, शास्त्रीय नृत्य के प्रति उनके ज्ञान में वृद्धि करने का प्रयास किया। गीताजंली आचार्य ने नृत्य के साथ–साथ विद्यार्थियों के साथ संवाद भी किया एवं अपनी प्रस्तुतियों की भाव भंगिमाओं के बारे में बताया तथा प्रश्न भी पूछे। साथ ही गीतांजली आचार्य द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली भंगिमाओं को छात्र–छात्राओं ने प्रस्तुत कर स्वयं को प्रदर्शित किया।

श्रीजी मंदिर के प्रांगण बरसाना में राधारानी के समक्ष सांयकालीन बेला में गीताजंली आचार्य ने नृत्य की प्रस्तुति दी जिसमें विशेषकर कृष्ण, सावन के झूले आदि से सम्बन्धित नृत्य ने ग्रामीणजन, महिलाएं, बालिकाएं, भक्तगण एवं सन्त महात्मा आदि नृत्य की बारीकियों को देखकर आनंदित हो गए। श्रीजी मन्दिर में ओडिसी नृत्य का पहला अभूतपूर्व सांस्कृतिक कार्यक्रम दर्शकों को मंत्र मुग्ध कर गया।

सभी विद्यालयों, मीडिया कर्मियों, नगर गण्यमान्यों एवं सन्त महात्माओं ने इस शास्त्रीय विधा को जन–जन तक पहुँचाने एवं युवा पीढ़ी को इससे जोड़ने एवं जागरूक करने के लिए इस तरह के आयोजन की बहुत सराहना की। उन्होंने कहा कि निश्चित

श्रीजी मंदिर के प्रांगण में प्रस्तुति देतीं गीताजंली आचार्य।

नृत्य का प्रदर्शन करते नृत्यांगना एवं साथी कलाकर।

ही इस नृत्य प्रदर्शन कार्यशाला के आयोजन से विभिन्न विद्यालय के छात्र–छात्राएं जो कि अपनी संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं, उनमें अपनी भारतीय संस्कृति को समझने और उसको सीखने के लिए ललक पैदा होगी।

इस ओडिसी नृत्य शास्त्रीय विधा से ब्रज क्षेत्र के लगभग 10,000 लोग लाभान्वित हुए।

छात्राओं को नृत्य के गुर सिखातीं गीताजंली आचार्य।

मंत्रमुग्ध होकर नृत्य को देखते छात्र–छात्राएँ।

गीतांजली आचार्य का परिचय

गीतांजली आचार्य, अपनी मेहनत प्रतिभा और आत्मविश्वास के फलस्वरूप भारत की ओडिसी नृत्य की एक पारंगत कलाकार एवं नृत्य निर्देशिका हैं। गीतांजलि आचार्य, भारत के ओडिसी के प्रख्यात गुरु पं. केलूचरण महापात्र और रतिकांत महापात्र की शिष्या हैं। गीताजंलीने, ओडिसा संगीत नाटक अकादमी से नृत्य शास्त्र का प्रशिक्षण एवं शिक्षण पूर्ण किया है।

गीतांजली आचार्य को देश–विदेश से कई पुरस्कार मिले हैं। उन्हें विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय उत्सवों में नृत्य प्रदर्शन का सौभाग्य मिला है। एक उत्तम गुरू के रूप में उन्होंने बहुत से शिष्य–शिष्याओं को ओडिसी में प्रशिक्षित किया है एवं उनका यह कार्य निरन्तर जारी है।

गीताजंली आचार्य को भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय की ओर से ओडिसी नृत्य के लिए नेशनल छात्रवृति भी मिली है।

छात्राओं को ओडिसी नृत्य का प्र

गीतांजली ने ओडिसी नृत्य की दी प्रस्तुति

मथुरा क्षेत्र के तीन विद्यालयों में आयोजित हुआ कार्यक्रम

शास्त्रीय नृत्य की बारीकियां सीखीं

स्पिक मैके ने शास्त्रीय नृत्य का दिया प्रशिक्षण

समन्वय प्रायोजित कार्यक्रम

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत गायिका महुआ मुखर्जी द्वारा ब्रज क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर संगीत की कार्यशाला एवं प्रस्तुति

- **कार्यक्रम विषय** : हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत एवं कार्यशाला
- **दिनांक** : 2 नवम्बर से 4 नवम्बर 2015 • **स्थान** : शिकोहाबाद, फिरोजाबाद, मैनपुरी, हिन्द परिसर।
- **आमंत्रित कलाकार** : श्रीमती महुआ मुखर्जी एवं सहयोगी कलाकार कार्मेन उर्फ कलावती, आरती एवं सोनिया
- **संयोजन** : स्पिक मैके चेप्टर, शिकोहाबाद एवं शब्दम्

भारतीय सांस्कृतिक धरोहरों से युवा वर्ग को रूबरू कराने के लिए 'शब्दम्' एवं 'स्पिक मैके' चेप्टर शिकोहाबाद के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 2 नवम्बर से 4 नवम्बर तक फिरोजाबाद एवं मैनपुरी जनपद के विभिन्न विद्यालय/महाविद्यालयों में महुआ मुखर्जी द्वारा शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुति एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया।

छात्र–छात्राओं ने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की बारीकियों के बारे में जाना। कलाकार ने विद्यार्थियों के साथ संवाद किया एवं अपनी प्रस्तुतियों की बारीकियों के बारे में बताया तथा प्रश्न भी पूछे। प्रत्येक विद्यालय के छात्र–छात्राओं ने कलाकार द्वारा प्रयोग किए जाने वाले रागों को स्वयं द्वारा प्रस्तुत किया। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत एवं कार्यशाला में महुआ मुखर्जी ने छात्र–छात्राओं को अपनी धुन के साथ सुरों की बारीकियों का अभ्यास कराया। जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साह पूर्वक अपनी प्रतिभागिता दी।

इस कार्यशाल एवं कार्यक्रम का आयोजन शिकोहाबाद के ठा. तारा सिंह इण्टर कॉलेज, संत जनू बाबा महाविद्यालय, बी.डी.एम. इण्टर कॉलेज, फिरोजाबाद के जी.डी. गोइनिका

शास्त्रीय संगीत एवं कार्यशाला की प्रस्तुति देती महुआ मुखर्जी।

पब्लिक स्कूल, मैनपुरी के कुँ. आर.सी. महाविद्यालय, सेण्ट मैरी स्कूल, सुदिती ग्लोबल एकेडमी, राजकीय महिला महाविद्यालय के लगभग 8000 छात्र–छात्राओं ने बड़े ही उत्साह के साथ इसमें भाग लिया।

विद्यालय–महाविद्यालयों में छात्र–छात्राओं के मध्य महुआ मुखर्जी द्वारा शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुति दी गई जो विशेषकर 'नदिया किनारे मोरा गांव साँवरे' एवं बेगम अख़्तर की ग़ज़ल' 'हमरी अटरिया पे आ जा सवरिया देखा–देखी बलम हुय जाए रे' आदि से सम्बन्धित संगीत पर आधारित थीं। उपस्थित सभी श्रोताओं ने सक्रिय सहभागिता दी एवं विभिन्न रागों को सुनकर मंत्रमुग्ध हुए। महुआ मुखर्जी के साथ तानपुरा पर कार्मेन उर्फ कलावती, तबले पर आरती एवं सोनिया ने संगत दी।

सभी विद्यालयों में कलाकारों एवं चेप्टर कर्मियों का स्वागत किया गया एवं सभी जगह वाग्देवी के चित्र पर माल्यापर्ण एवं दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुए। शिक्षकों, संगीत प्रेमियों ने भी हर्ष एवं उल्लास के साथ कार्यक्रम का आनन्द लिया।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत एवं कार्यशाला का अभिवादन करते स्कूली छात्र।

महुआ मुखर्जी का परिचय

महुआ मुखर्जी पटियाला घराने से संबंध रखती हैं। उन्हें विदुशी संयुक्ता घोष, पंडित शान्तनु भट्टाचार्य द्वारा 'हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत' में प्रशिक्षण प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त है। वह प्रत्यक्ष रूप से पंडित अजय चक्रवर्ती की शिष्या हैं तथा Semi Classical Form की शिक्षा श्रीमती शिप्रा बसु से प्राप्त की है।

महुआजी की मधुर आवाज़ जो इन्हें ईश्वरीय वरदान के रूप में प्राप्त है पूरी तरह से भारतीय संगीत की 'ख़याल' एवं 'ठुमरी' शैली के लिए उपयुक्त है। उनके द्वारा रागों का भावपूर्ण गायन श्रोताओं को सदा मंत्रमुग्ध रखता है। उनकी राग संरचना, शानदार फ्रेजिंग तथा विभिन्न प्रकार के तान पैटर्न का व्यवस्थित प्रदर्शन उनके गायन के महत्त्वपूर्ण गुणो में से एक हैं। वह अपने उल्लेखनीय गुणों से जैसे ख़याल, ठुमरी, कजरी, चैती इत्यादि के भावपूर्ण एवं मधुर गायन के कारण महान कलाकार हैं। महुआ मुखर्जी भारत एवं विदेशों के विभिन्न प्रतिष्ठित संगीत कार्यक्रमों जैसे भारतीय नाद परिषद सहित कई नामचीन कार्यक्रमों में अपनी प्रस्तुति दे चुकी हैं। कार्यक्रमों की एक लम्बी फ़ेहरिस्त हैं। वह आकाशवाणी की नियमित कलाकार हैं तथा भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद के कलाकारों के पैनल में शामिल है। महुआजी को 'प्राचीन कला केन्द्र' द्वारा 'संगीत प्रभाकर 'तथा 'संगीत विशारद' की उपाधि दी गई है। वह हैदराबाद के निज़ाम राजा की ओर से सम्मानित हो चुकी हैं तथा उनके महल में भी अपनी प्रस्तुति दी है। वर्तमान में महुआ जी 'कल्पतरु आर्ट एकेडमी' की निर्देशक हैं।

एक सुर एक ताल: सेण्ट मैरीज में गूंजी स्वर लहरी

हमरी अटरिया पे आ जा सवारियां, देखी दर्शी बलम हेजाए रे - महुआ मुखर्जी

'आज जाने की जिद न करो...'

शास्त्रीय संगीत गायिका महुआ मुखर्जी ने दी प्रस्तुति

'आज जाने की जिद न करो...'

अंतर्मन को शान्ति देने वाला है शास्त्रीय संगीत

स्कूलों में संगीत शिक्षक का होना जरूरी: महुआ मुखर्जी

संगीत भारतीय संस्कृति की पुरा

शास्त्रीय संगीत के लिए हिंदुस्तान में बस गईं कार्पिन

छात्रों के हाथों ने दिखाया भविष्य का विज्ञान

संगीत में अभ्यास और समर्पण की बेहद जरूरत

जागो बंसी वाले ललना जागो मेरे प्यारे...

“ संगीत एक नैतिक कानून है।
वह सृष्टि को आत्मा देता है,
मस्तिष्क को पंख देता है,
कल्पना को उड़ान देता है तथा
जीवन को आकर्षण व उल्लास देता है। ”

-प्लेटो

समन्वय प्रायोजित कार्यक्रम

युवा पीढ़ी को शास्त्रीय विधा से रूबरू कराने के लिए कथक कार्यशाला का आयोजन

● **कार्यक्रम विषय** : कथक कार्यशाला एवं नृत्य ● **दिनांक** : 7 दिसम्बर 2015 से 10 दिसम्बर 2015 तक
● **आमंत्रित कलाकार** : श्रीमती विद्या गौरी एवं साथी कलाकार ● **स्थान** : बाह, जैतपुर कला (चम्बल क्षेत्र), इटावा, जसवंतनगर, सिरसागंज, फिरोजाबाद के विभिन्न विद्यालय एवं महाविद्यालय
● **संयोजन** : स्पिक मैके चेप्टर, शिकोहाबाद एवं शब्दम्

'स्पिक मैके' चेप्टर शिकोहाबाद एवं 'शब्दम्' के संयुक्त बैनर तले दिनांक 7 दिसम्बर 2015 से 10 दिसम्बर 2015 तक आगरा, फिरोजाबाद एवं इटावा जनपद के विभिन्न विद्यालय/महाविद्यालय में ख्याति प्राप्त नृत्यांगना विद्या गौरी अडकर द्वारा जयपुर एवं बनारस घराने की कथक कार्यशाला एवं नृत्य का आयोजन किया गया।

छात्र–छात्राओं ने शास्त्रीय विद्या कथक नृत्य की बारीकियों को आगरा ज़िले के चम्बल जैसे बीहड़ के क्षेत्र म़ें शास्त्रीय नृत्यांगना विद्यागौरी द्वारा कथक नृत्य प्रदर्शन एवं कार्यशाला से पूरे चम्बल क्षेत्र की आबोहवा को शास्त्रीय रागों और कथक नृत्य से सराबोर कर दिया, जहां कभी डकैतों और बागियों की कहानियां चर्चा में रहती थीं। इस क्षेत्र में बसे लोगों के मध्य शास्त्रीय धरोहर एवं शास्त्रीय विद्या को पहुंचाने का कार्य 'स्पिक मैके' चेप्टर शिकोहाबाद एवं शब्दम् के सयुक्त तत्वाधन मे पहली बार संभव हुआ, जिसे लोगों ने बहुत सराहा और समय–समय पर इस तरह के आयोजन कराने के लिए माँग की।

कथक की बारीकियों के बारे में छात्राओं को जानकारी देतीं विद्यागौरी।

एनडी जैन स्कूल के छात्र–छात्राओं के साथ विद्यागौरी

कथक नृत्य की प्रस्तुति देतीं विद्यागौरी।

इस कार्यशाला एवं प्रस्तुति का आयोजन चम्बल क्षेत्र के बाह स्थित एनडी जैन स्कूल, जैतपुर कलां स्थित बीडीएन इण्टर कॉलेज एवं सिद्धांत राज महाविद्यालय, जसवंत नगर में स्थित सुदिती ग्लोबल एकेडमी, सिरसागंज स्थित राजकीय महिला महाविद्यालय, शिकोहाबाद हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन, इटावा स्थित माउण्ट लिटेरा स्कूल, कर्मक्षेत्र इण्टर कॉलेज एवं कर्मक्षेत्र महाविद्यालय, फिरोजाबाद स्थित राम कन्या इण्टर कॉलेज में कराया गया।

श्रीमती विद्या गौरी द्वारा कथक नृत्य की प्रस्तुति एवं कार्यशाला के माध्यम से लगभग 5000 छात्र–छात्राओं ने फुटवर्क, कृष्ण भगवान की माखन चोरी, यशोदा मां का दुलार, कृष्ण की बाजे पैजनिया, सूरदास के पद एवं त था थई की बारीकियां विद्यार्थियों को बताईं।

विद्यालयों के प्राचार्यों एवं शिक्षकगण ने विद्या गौरी द्वारा दी गई कथक नृत्य की कार्यशाला को अत्यंत प्रभावी एवं प्रेरणादायक बताया। विद्यागौरी के साथ तबले पर उनके साथी कलाकार मुजफ्फर मुल्ला ने संगत दी।

कथक कार्यशाला का दृश्य।

बीडीएन इण्टर कॉलेज जैतपुर के छात्र–छात्राओं के साथ विद्यागौरी।

श्रीमती विद्या गौरी का परिचय

विद्या गौरी जी, दूरदर्शन दिल्ली की उच्चकोटि के कलाकारों में से एक हैं। बनारस और जयपुर घराने की कथक शैली की सुप्रसिद्ध कलाकार हैं। उनका प्रारम्भिक प्रशिक्षण, बनारस शैली के प्रसिद्ध कथक गुरू ज़फ़र मुल्लाजी द्वारा दिया गया है। अपनी एम.एससी. (गणित) की डिग्री, प्राप्त कर वह वह दिल्ली के कथक के राष्ट्रीय संस्थान से जुड़ी और कथक के गुरू पं. राजेन्द्र गंगानी जी के कुशल मार्ग दर्शन में कथक की जयपुर शैली की वारीकियों का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। उन्होंने कथक में पोस्ट डिप्लोमा तथा ऑनर्स की उपाधि राष्ट्रीय कथक केन्द्र दिल्ली से, 'उपन्तया विशारद' गंधर्व महाविद्यालय और कथक पढविका तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ से प्राप्त की है।

विद्यागौरी ने सम्पूर्ण भारत में प्रख्यात कलाकारों जैसे पद्मश्री शोभना नारायण, जय किशन, सुश्री शर्मिष्ठा मुखर्जी, सुश्री मोनिका नायक, श्रीमती कविता द्विवेदी, श्रीमती जयप्रभा मैनन तथा श्रीमती शिखाहरे के साथ प्रदर्शन किया है।

उन्होंने कथक केन्द्र नई दिल्ली में आसावरी स्कूल, आईएनसीईएन स्कूल में अध्यापन करने का गौरव प्राप्त है तथा एनडीएमसी और स्पिक मैके में वर्कशॉप प्रदर्शन करने का श्रेय प्राप्त है।

विद्या गौरी भारत के विभिन्न प्रतिष्ठित सांस्कृतिक आयोजनों में अपनी प्रस्तुति दे चुकी हैं। विभिन्न देशों एवं आईसीसीआर के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय होने वाले संगीत–नृत्य आयोजनों में अपने नृत्य का कुशल एवं प्रभावी प्रदर्शन कर चुकी है।

आप 'कलातीर्थ' इंस्टीट्यूट ऑफ़ परफ़ार्मिंग आर्ट की संस्थापिका हैं और शास्त्रीय विद्याओं का प्रशिक्षण दे रही हैं।

नृत्यांगना विद्या ने सिखाई कत्थक नृत्य की बारीकियां

सुदिति ग्लोबल एकेडमी स्कूल में हुआ कार्यक्रम

छात्राओ को सिखाए कथक के गुर

छात्राओं ने सीखी शास्त्रीय संगीत की बारीकियां

भारतीय संस्कृति को जीवन्त रख
लिए शास्त्रीय नृत्य जरूरी: विद्या

रदर्शन कलाकार ने छात्राओं को दिए टिप्स

बालिका-महिला पाठशाला - एक चुनौती

मदीना छोटी–छोटी लकड़ियां बीनकर घर लाती थी। माँ उन लकड़ियों की आंच पर रोज का खाना बनाती थी। लगभग 2 से 3 घण्टे तक बीनी गई लकड़ियों से बना खाना मदीना के परिवार को एक अलग मिठास देता था, पर मदीना के जीवन में एक कड़वाहट भी थी। उसका बचपन इन लकड़ियों के कांटों में ही खो गया था। किताब पर लिखे हुए अक्षर उसके लिए काली स्याही से ज़्यादा कुछ नहीं थे। बचपन में मदीना स्कूल गई तो उसका मन नहीं लगा। घरवालों ने भी कभी पढ़ाई के लिए उस पर ज़ोर नहीं दिया और आज जब उसे पढ़ाई का महत्त्व समझ में आया, तो वह कहां पढ़े, कैसे पढ़े जैसे प्रश्न उसके सामने हैं। उम्र अधिक होने के कारण अब वह स्कूल भी नहीं जा सकती है।

यह केवल एक मदीना की कहानी नहीं है। हमारे मध्य अंसख्य 'मदीना' आज निरक्षर हैं, पढ़ना चाहती हैं, पर उचित अवसर न होने के कारण वह पढ़ नहीं पाती हैं।

ऐसे एक गाँव (नगला डेरा) के विषय में ग्राम प्रधान भानेश जी से शब्दम् टीम को पता चला। शब्दम् टीम ने नगला डेरा गांव का सर्वे किया, सर्वे की रिपोर्ट के अनुसार–

प्रशिक्षण देती शिक्षिका।

पढ़ाई की शुरुआत करतीं महिलाएँ व बालिकाएँ।

नगला डेरा गाँव की आर्थिक स्थिति –

मुस्लिम बाहुल्य ग्राम नगला डेरा में अधिकांश लोग दिहाड़ी पर कार्य करने वाले मज़दूर हैं। यद्यपि गाँव के लोग मज़दूरी कर अच्छा धन कमा लेते हैं पर कुछ बुरी लत के कारण (शराब, सिगरेट तम्बाकू और जुआ), अधिकांश लोगों की अर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। गाँव में ज़्यादातर लोगों के मकान कच्चे हैं। आर्थिक स्थिति का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि नगला डेरा गाँव के अधिकांश लोग प्रतिदिन खाना बनाने से पूर्व दोनों समय का राशन खरीदते हैं।

नगला डेरा गाँव की सामाजिक स्थिति –

लगभग 700 लोगों की जनसंख्या वाले ग्राम नगला डेरा में 250 महिलाएं हैं। गाँव के अधिकांश महिला पुरूष, गुटखा या पान लगभग हर समय मुँह में रखते हैं। पुरुष बीड़ी, सिगरेट, शराब जैसी बुरी लत के शिकार हैं। सामाजिक तौर पर गाँव के लोग एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, किसी प्रकार की विपत्ति या आपात स्थिति का सामना वह मिलजुलकर कर करते हैं। गाँव में बाहर से आए हुए किसी भी व्यक्ति के साथ गाँव के लोग अच्छे तरीके से पेश आते हैं।

नगला डेरा गाँव में शिक्षा की स्थिति –

20 आयु वर्ष से ऊपर के महिला पुरुष में शिक्षा का स्तर शून्य के क़रीब है। ग्राम निवासी न तो शिक्षा के महत्त्व को समझते हैं और ना समझना चाहते हैं। बावजूद इसके ग्राम निवासी अपने कार्य क्षेत्र में आने वाले हिसाब–किताब को आसानी से लगा लेते हैं। इस संदर्भ में ग्राम के ही एक बुजुर्ग व्यक्ति कमरुद्दीन का कहना है कि मैं कभी स्कूल नहीं गया, पर पूरा हिसाब किताब बिना लिखे

पाठशाला में उपस्थित बालिकाएँ व महिलाएँ।

आसानी से लगा सकता हूँ।

उपर्युक्त सर्वे के निष्कर्षों के पश्चात् शब्दम् संस्था ने 1 मई 2015 को ग्राम नगला डेरा में बालिका–महिला पाठशाला खोलने का निर्णय लिया। बालिका महिला पाठशाला प्रारम्भ करते समय गाँव के लोग बहुत ज्यादा उत्साहित नहीं थे, पर संस्था के कार्यकर्ताओं द्वारा समय–समय पर ग्राम प्रधान भानेश जी को साथ लेकर गाँव के लोगों से बात की गई। उन्हें साक्षर होने का महत्त्व बताया। वर्तमान में भी स्थिति बहुत उत्साहजनक नहीं है, परन्तु जो आठ–दस महिलाएं लगातार बालिका–महिला पाठशाला में आ रही हैं, आज वे कई सरकारी काग़जों पर अगूंठे लगाने की जगह बड़े गर्व से अपना नाम लिखती हैं।

आज मदीना अख़बार पढ़ लेती है, जोड़, बाक़ी, गुणा एवं भाग उसको आ गया है। 2 माह बाद उसकी शादी है। वह बड़े गर्व के साथ कहती है कि जो ज्ञान उसे शब्दम् संस्था से प्राप्त हुआ है, उसे वह अपने ससुराल जाकर कुछ निरक्षर महिलाओं में बाँटेगी।

इससे पूर्व 'शब्दम्' संस्था दुधरई खेड़ा, लखनपुरा, केसरी, नगला भीमसेन, किशनपुर एवं हिन्द परिसर में बालिका–महिला पाठशााला चला चुकी है।

नगला डेरा गांव से उत्साहित होते हुए क़रीब 5 किलोमीटर दूर नगला चांट गॉव में भी शब्दम् ने बालिका–महिला पाठशाला प्रारम्भ की और महिलाओं को साक्षर बनाने की दिशा में एक क़दम और बढ़ाया।

बालिका-महिला पाठशाला का शुभारंभ

शिक्षा की ज्योति जलाने नगला डेरा पहुंचा शब्दम

नगला डेरा में बालिका शिक्षा के लिए खुलेगी पाठशाला

अमर उजाला ब्यूरो

शिक्षाहीन है 200 साल पुराना नगला डेरा गाँव

यहां के लोग रोज कमाने-खाने वाले, शब्दम ने की शिक्षा देने की पहल

सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र

'नारी को सिर्फ़ साक्षर ही नहीं, स्वावलम्बी भी बनना होगा' इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शब्दम् बालिकाओं–महिलाओं के मध्य सिलाई केन्द्र का संचालन करता है। वर्तमान में सिलाई के दो सत्र हिन्द लैम्प्स परिसर केन्द्र में एवं एक सत्र शिकोहाबाद के शम्भूनगर केन्द्र में चलाया जा रहा है।

पिछले एक दशक से 'शब्दम्' सिलाई केन्द्र लगभग 1500 बालिकाओं/महिलाओं को सिलाई कला में निपुण बनाकर स्वावलम्बी बना चुका है।

अभी तक संस्था नगला बांध, बढ़ाईपुरा, झमझमपुर, बैरई, मेवली, नगला सुन्दर, खतौली, रसूलपुर, नगला टीकाराम, छोटी सियारमऊ, बड़ी सियारमऊ, नगला लोकमन, नगला जवाहर, नगलाऊमर, बड़ी गैलरई, नगला सीताराम, हरगनपुर, नगला चन्दा, लाछपुर आदि ग्रामों में सिलाई केन्द्र संचालित कर चुकी है।

सिलाई केन्द्र में सिलाई प्रशिक्षण सीख रहीं कुछ छात्राओं के विचार....

आज मुझे यहाँ तीन महीने पूरे हो गये हैं। मैंने यहां ब्लाउज़ और बैग बनाना भी सीखा है।

मुझे थोड़ी बहुत सिलाई करनी आती थी लेकिन यहाँ आकर मैंने और अच्छी तरह से सिलाई सीखी है। मुझे इन्ची टेप में कुछ नहीं आता था, वो भी यहाँ आकर सीख पायी।

शब्दम् सिलाई केंद्र एक दृश्य।

सिलाई करना मुझे बचपन से पसन्द था और जो मुझे अच्छा लगता उसे मैं मन लगाकर सीखती हूँ।

– प्रिया यादव

मैंने सिलाई केन्द्र में सर्वप्रथम टाँके लगाना सीखा। सिलाई केन्द्र में हमें मैडम द्वारा अख़बार की कटिंग के माध्यम से कपड़ा काटने का तरीक़ा सीखने को मिला। आज मैं पेटीकोट, सादा ब्लाउज़ और अस्तर का कपड़ा बनालेती हूँ। गांव की कुछ महिलाओं के कपड़े सिला कर मैं अपनी पढ़ाई का पूरा खर्च स्वयं कमा लेती हूँ।

– मजधा यादव

सर्व प्रथम हमने सिलाई केन्द्र में टाँके लगाने सीखे, बाद में सूट काटना सीखा। मैं इतनी दूर से आती हूँ मेरा किराया 20 रु. लगता है, पर मैं इसे लगन से सीखना चाहती हूँ। हमारे गांव की मधु ने भी यहीं से सिलाई सीखी थी। आज वह 200 से 250 रु. प्रतिदिन सिलाई के माध्यम से कमा लेती है। मैं भी उसी की तरह बनना चाहती हूँ।

– नीतू यादव

प्रशिक्षण के दौरान तैयार किए वस्त्रों के साथ बालिकाएँ।

हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित सिलाई केंद्र में प्रशिक्षण के दौरान सिलाई करतीं बालिकाएँ।

'हर बेटी-बहन को दुर्गा बनना होगा' विचार गोष्ठी

- **कार्यक्रम विषय** : 'हर बेटी–बहन को दुर्गा बनना होगा' विचार गोष्ठी
- **दिनांक** : 14 अक्टूबर 2015 • **स्थान** : ज्ञानदीप विद्यालय शिकोहाबाद
- **आमंत्रित** : विभिन्न महाविद्यालयों/विद्यालयों के छात्र–छात्राएं

''कोमल है कमज़ोर नहीं, तू शक्ति नाम ही नारी है; जग को जीवन देने वाली, मौत भी तुझसे हारी है।'' आदर्श कृष्ण महाविद्यालय की छात्रा पूजा यादव ने जब इन पंक्तियों को ज्ञानदीप विद्यालय के सभागार में मंच से प्रस्तुत किया तो उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति उनके सम्मान में खड़ा हो गया।

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी 'शब्दम्' द्वारा नव दुर्गा के अवसर पर 'हर बहन–बेटी को दुर्गा बनना होगा' विचार गोष्ठी का आयोजन शिकोहाबाद स्थित ज्ञानदीप विद्यालय में किया गया।

शिकोहाबाद नगर के 11 महाविद्यालयों /विद्यालयों के 55 छात्र–छात्राओं ने इस संगोष्ठी में भाग लिया जो कि निम्नलिखित हैं।

आदर्श कृष्ण महाविद्यालय, पालीवाल महाविद्यालय, नारायण महाविद्यालय, संत

विचार प्रस्तुत करती छात्रा।

जनू बाबा स्मारक महाविद्यालय, प्रहलाद राय टीकमानी सरस्वती विद्या मन्दिर, जे.एस. कॉलेज ऑफ़ एजूकेशन, यंग स्कालर्स एकेडमी, शान्ति देवी आहूजा महिला महाविद्यालय, बी.डी.एम. गर्ल्स इण्टर कॉलेज, ज्ञानदीप सी.सेके. पब्लिक स्कूल, मधु माहेश्वरी कन्या सरस्वती विद्या मन्दिर।

संगोष्ठी में उपस्थित छात्र–छात्राओं को निम्नलिखित पांच बिन्दुओं पर 2 मिनट के अन्दर अपनी बात रखने का अवसर दिया गया।

१. बहन सशक्त कैसे हो?

–आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, शैक्षणिक, शारीरिक एवं वैचारिक रूप से सशक्त एवं स्वतंत्र बनाने हेतु क्या कदम उठाए जाने चाहिए ?

२. बहन सुरक्षित कैसे हो?

–सार्वजनिक स्थानों, शैक्षणिक संस्थाओं, सरकारी एवं गैरसरकारी कार्यस्थलों आदि में उसके मान और मर्यादा की कैसे रक्षा हो।

३. बहन कुरीतियों से कैसे बचे?

–कन्या भ्रूणहत्या, कुपोषण, कन्या के लालन–पालन में भेदभाव, 18 वर्ष से कम आयु में विवाह, पर्दा प्रथा, दहेज के लिए प्रताड़ना, आदि बुराइयों/कमजोरियों को हटाने के लिए क्या–क्या मजबूत कदम उठाए जाएं।

४. बहन के अधिकारों की रक्षा कैसे हो?

–पारिवारिक–जन्मसिद्ध एवं कानूनी, सांविधानिक अधिकारों की रक्षा करने में भाई के सहयोग की भूमिका क्या हो ?

५. राष्ट्रनिर्माण में बहन की भूमिका कैसे दृढ़ हो?

–राष्ट्रीय, राजनीतिक निजी क्षेत्र एवं शासकीय सेवाओं में रुचि एवं प्रतिभा के अनुकूल समान अवसर की उपलब्धता कैसे

सभागार में विचार प्रस्तुत करता छात्र।

सुनिश्चित हो।

जे.एस. कॉलेज ऑफ़ एजूकेशन की छात्रा दीक्षा गुप्ता ने कहा कि महिलाओं को शिक्षा के साथ ही आत्म–निर्भर बनाना भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण साबित होगा। महिलाओं का क्षेत्र अब घर की चारदीवारी नहीं, बल्कि अब वे आर्थिक, सामाजिक, वैचारिक रूप से सुदृढ़ होने लगी है। यहीं से महिला सशक्तिकरण का प्रारम्भ होता है।

पालीवाल महाविद्यालय की छात्रा वैशाली सिंह ने कहा कि हमें अपनी सोच को क़ानून बनाने या बदलने से ज़्यादा उन पर सही तरह से अमल करने में लगाना चाहिए, शिक्षा को लेकर नीतियां भी सही होनी चाहिएं; अगर महिला शिक्षित होगी तभी सशक्त होगी।

संत जनू बाबा स्मारक महाविद्यालय की छात्रा चौधरी गुप्ता ने कहा कि ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता'' यह सिर्फ़ एक कहावत बनकर रह गयी है। हमारा देश काफ़ी प्रगति कर रहा है और निःसंदेह आगे भी करेगा। स्त्रियों को उनका जितना सम्मान मिलना चाहिए, उतना नहीं मिल पा रहा है। आज नारी का सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक शोषण प्रत्येक क़दम पर किया जाता है। अंत में उन्होंने कविता पढ़कर अपनी बात पूरी की।

''हर जगह मुँह की खाओगे अगर बेटी को न अपनाओगे''

पालीवाल महाविद्यालय की शिवानी राठौर ने कहा ''नारी का सैलाब जिस तरफ़ उमड़ जाता है, इतिहास गवाह है कि इतिहास बदल जाता है।'' सब कहते हैं आज ज़रूरत सोच बदलने की है, मेरी सोच कहती है कि यदि हमें बदलाव देखना है, तो शुरुआत हमें स्वयं से करनी होगी।

प्रहलाद राय टीकमानी सरस्वती विद्या मंदिर

समूह छायांकन।

की छात्रा नीतू यादव ने कहा कि आज हमारे देश में बेटियों को बेटे के समान स्थान तो दिया जा रहा है, लेकिन उनका सम्मान ग़ायब होता जा रहा है। इसलिए मैं कहना चाहूँगी।

''बेटियों को बचालो-बेटियाँ ही देश का भविष्य हैं।''

शब्दम की विचार गोष्ठी सम्पन्न

हर बहन-बेटी का दुर्गा बनना होगा

शिकोहाबाद। शब्दम् द्वारा आयोजित ह्रहर बहन-बेटी का दुर्गा बनना होगा विचार गोष्ठी का आयोजन स्टेशन रोड स्थित ज्ञानदीप विद्यालय के हॉल में आयोजित किया गया।

इस गोष्ठी में नगर के कई एक विद्यालय एवं महाविद्यालयों के छात्र-छात्राएं एवं अध्यापकगणों की उपस्थित रहकर अपने विचार प्रकट किए। विद्यार्थियों की पूर्ण उपस्थित एवं उनके विचारों से पता चलता है कि आज के इस वर्तमान पीढी के अन्दर नारी सशक्तिकरण एवं उसके सम्मान के लिए अलख जगी हुयी है।

शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज का संदेश कहा कि हमें सामाजिक और नैतिक कुरूतियों के जड में जाकर उसका निवारण करना होगा। क्योंकि नैतिक दृष्टि से नारी अनेक वर्जनाओं का शिकार हो गयी है। पत्तों पर पानी छिडकने से पेड कभीं हरा नहीं रह सकता। हमें सामाजिक कुरूतियों जैसे परदा प्रथा, दहेज प्रथा, जाति प्रथा, विधवा प्रथा आदि को बदलना होगा। डा. महेश आलोक ने शब्दम् द्वारा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न गतिविधियों एवं विचार गोष्ठी में अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि आज महिलाएं एक कुशल गृहणी से लेकर एक सफल व्यावसायी की भूमिका बेहतर तरीके से निभा रही हैं। नई पीढ़ी की महिलाएं तो स्वयं को पुरुषों से बेहतर साबित करने का एक भी मौका गंवाना नहीं चाहती। लेकिन गांव और शहर की इस दूरी को मिंटाना जरूरी है। डा. रजनी यादव ने कहा कि महिला मंत्रालय द्वारा बच्चों के लिए राष्ट्रीय चार्टर पर जानकारी प्राप्त करें। प्रयोक्ता जीवन, अस्तित्व और स्वतंत्रता के अधिकार की तरह एक बच्चे के विभिन्न अधिकारों के बारे में पता लगा सकते हैं,।

'हर बहन-बेटी को दुर्गा बनना होगा'

ज्ञान दीप सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल में हुई विचार गोष्ठी

'हर बहन-बेटी को बनना ...

फिरोजाबाद। साहित्यिक संस्था शब्दम् द्वारा ... बेटी को दुर्गा बनना होगा' विचार गोष्ठी का ... सीनियर सेकेण्डरी पब्लिक स्कूल में किया ... विद्यालय एवं महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं ... इस मौके पर अध्यापकगणों ने उपस्थित रहकर ... किए। शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज ने अपने ... हमें सामाजिक और नैतिक कुरूतियों के ज... निवारण करना होगा। इस अवसर पर पीआ... कल्पना यादव ने कहा कि बेटी के बिना परि... दिशा सकारात्मक सोच हमें जगानी होगी। ... नारी को अपने आपको कमजोर नहीं सम... महाविद्यालय की छात्रा हिमांशु अवस्थी ने क... दूर रहकर हमें सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर ... उन्होंने महिला शिक्षा पर बल दिया। डा. महेश ... आज बेटी हर ओर सशक्त हो चुकी है।

शब्दम् द्वारा आयोजित 'हर बहन-बेटी ... दुर्गा बनना होगा' विचार गोष्ठी सम्प...

बेटी को दुर्गा बन बुराइयों को दूर करना होगा

आयोजन

- शब्दम संस्था ने ज्ञानदीप स्कूल में आयोजित की विचार गोष्ठी
- विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने अपने विचारों को रखा

सतत एवं स्थायी कार्यक्रम

'बहन बचाओ' विचार गोष्ठी का आयोजन

- **कार्यक्रम विषय** : 'बहन बचाओ' विचार गोष्ठी का आयोजन
- **दिनांक** : 27.08.2015
- **स्थान** : संस्कृति भवन, हिन्द लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद।
- **संयोजन** : शब्दम्

हिन्द लैम्प्स स्थित संस्कृति भवन में 'बहन बचाओ' विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस में विद्यालयों–महाविद्यालयों के शिक्षकों एवं अन्य गण्यमान्य बुद्ध जीवियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ श्रीमती किरण बजाज के मुम्बई से दिए गए संदेश से हुआ, जिसमें उन्होंने कहा कि जन्म से ही भाई और बहन को हर घर में समान अवसर सहयोग और अधिकार मिलें। हमारा आन्दोलन परिवार से शुरू होकर, विद्यालय और महाविद्यालय की ओर बढ़ेगा तभी उनका सर्वांगीण विकास होगा। उन्होंने कहा ठीक आज से 2 वर्ष पूर्व शब्दम् संस्था ने 'बहन बचाओ' अभियान का प्रारम्भ किया था। जिस में हमने पांच मुख्य बिन्दुओं पर बात की थी।

1. बहन सशक्त कैसे हो?
2. बहन सुरक्षित कैसे हो?
3. बहन के अधिकारों की रक्षा कैसे हो?
4. बहन कुरीतियों से कैसे बचे?
5. राष्ट्रनिर्माण में बहन की भूमिका कैसे दृढ़ हो?

अब समय इस चिंतन को तेजी से सक्रिय

गोष्ठी में उपस्थित शिक्षकगण एवं गण्यमान्य।

करने का है और यह तभी हो सकता है, जब भावी पीढ़ी को निरन्तर सही दिशा के लिए प्रेरित करें एवं पूर्ण रूप से सहयोग दें।

मैं यह चाहूंगी कि हम सब मिल कर फिरोजाबाद ज़िले में 'बहन बचाओ' अभियान की ऐसी अलख जगाएं कि पूरे भारत में यह रोशनी फैल जाए, और हमारी हर बहन–बेटी भारत का भविष्य उज्ज्वल कर ने में सहायक हो।

शब्दम् सलाहकार डॉ. रजनी यादव ने कहा कि जो भाई, बहन की रक्षा न कर सके और बहन के प्रति गलत नज़रिया रखता हो, उसका एवं उसके परिवार का सामाजिक बहिष्कार होना चाहिए।

शब्दम् सलाहकार डॉ. महेश आलोक ने कहा कि प्रत्येक विद्यालय में महिलाओं के लिए एक हेल्पलाइन नम्बर होना चाहिए।

शब्दम् सलाहकार श्री अरविन्द तिवारी के अनुसार लिंगानुपात को समान करने हेतु अब भ्रूण हत्या रोकने के लिए महिलाओं को भी जागरूक करना होगा, क्योंकि भ्रूण हत्या का एक बड़ा कारण महिलाएँ स्वयं भी हैं। उन्होंने कहा कि समस्त विद्यालयों में भी प्रति वर्ष 'बहन बचाओ'अभियान के अंतर्गत जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिएं।

ब्राइट स्कॉलर्स एकेडमी, सिरसागंज के निदेशक श्री संजय शर्मा ने कहा कि 'बहन' का शाब्दिक अर्थ अपने पिता की बेटी ही है। हम इसे अलग ले लेते हैं जबकि संसार की

प्रत्येक बेटी हमारी बहन ही है।

पुरातन सरस्वती विद्यामन्दिर, शिकोहाबाद के प्रधानाचार्य श्री अशोक जी ने कहा कि छात्र–छात्राओं की दिनचर्या एवं वेशभूषा पर परिजनों एवं शिक्षकों को बहुत जोर देना चाहिए, क्योंकि अच्छी दिनचर्या और अच्छी वेशभूषा से छात्रों में अच्छे विचार पैदा होते हैं।

ब्लूमिंगबड्स, शिकोहाबाद के निदेशक श्री राज पचौरी ने कहा कि आज के वर्तमान समय में पूजास्थल, कोचिंग सेन्टर और रेस्टोरेन्ट, अनैतिक गतिविधियों के केन्द्र बन गए हैं। प्रशासन को इन अनैतिक गतिविधियों के केन्द्रों का औचक निरीक्षण करना होगा, जिससे इन केन्द्रों की पवित्रता बनी रहे।

यंग स्कालर्स, एकेडमी शिकोहाबाद की प्रधानाचार्य श्रीमती पूजा कपूर के अनुसार हम नैतिक शिक्षा का पाठ बेटियों को तो पढ़ाते हैं, परन्तु इसकी असली आवश्यकता बेटों को शिक्षित करने की है।

अन्य वक्ताओं में सिरसागंज से रामशरण

विद्यानिकेतन एवं डिवाइन इण्टरनेशनल स्कूल के प्रबन्धक श्री ओमशरणजी, क्षेत्रिय इण्टरकॉलेज के श्री नरेशजी एवं श्री सुरेशचन्द्र, ब्राइट स्कॉलर्स एकेडमी के प्रबन्धक श्री प्रवेश, आर्यसमाज से पं. नवीन शास्त्री तथा शिकोहाबाद के ज्ञानदीप विद्यालय से श्री आशीश गुप्ता, न्यू गार्डेनिया से विनोदकुमार, यंगस्कालर्स से सीमा मिश्रा, श्रीमती भगवतीदेवी कन्या विद्यालय से कुमकुम पालीवाल, पातंजलि से पी.एस. राना एवं सुशील आर्य के अनुसार, हमें महिलाओं के प्रति अपनी भावना को बदलना होगा और उनके प्रति व्यवहार में समानता लानी होगी।

विचार गोष्ठी में पिछले वर्ष जारी किए घोषणापत्र पर विचार किया गया एवं कुछ सुधार कर नया संयुक्त घोषणा पत्र तैयार किया गया, जिन विन्दुओं पर शैक्षणिक संस्थाएं कार्य करेंगी।

1. शिक्षक–अभिवावक समिति का निर्माण।
2. मातृशक्ति सम्मेलनों का क्रियान्वयन।
3. विद्यालय/महाविद्यालयों में बालिका सशक्तिकरण की समितियों का निर्माण।
4. बालिकाओं का सशक्तिकरण।
5. जूडो–कराटे इत्यादि का प्रशिक्षण।
6. योग का प्रशिक्षण।
7. संस्कारों, नैतिक मूल्यों एवं गौरवमयी इतिहास की शिक्षा।
8. इलैक्ट्रोनिक उपकरणों के सदुपयोग हेतु ठोस उपाय करना।
9. पाठ्यक्रमों के आधार पर समय–समय पर विचार गोष्ठी।
10. छात्र–छात्राओं को विशेषज्ञों द्वारा परामर्श देना।
11. शालीन विद्यार्थियों को प्रोत्साहन के लिए अंक देना।
12. समर कैम्प लगाकर तकनीकी एवं शारीरिक योग्यता प्रबल बनाना।
13. छात्राओं के लिए एक हेल्पलाइन नम्बर

समूह छायांकन।

प्रारम्भ करना।

14. प्रत्येक विद्यालय में एक समिति बनाना, जो उपर्युक्त बिन्दुओं पर लगातार कार्य कर सके।

कार्यक्रम के अंत में श्री मंजर–उल वासै ने भारतीय वीरांगनाओ की ओर संक्षिप्त इंगित करते हुए विभिन्न महाविद्यालयों/विद्यालयों से पधारे प्राचार्यगण, पुरुष एवं महिला प्रवक्ताओं, अन्य प्रतिनिधि एवं समस्त प्रतिभागियों के प्रति शब्दम् की तरफ से आभार प्रकट किया।

शब्दम द्वारा आयोजित की गई विचार गोष्ठी
बहन बचाओ आन्दोलन पर बेबाक बोले वक्ता

'बहन बचाओ' विचार गोष्ठी संप
अमर उजाला ब्यूरो
शब्दम ने किया कार्यक्रम का आयोजन

बहन बचाओ आन्दोलन पर हुई गोष्ठी
जनपद के शिक्षकों ने रखे अपने-अपने विचार

फिरोजाबाद (सकब)। शब्दम द्वारा हिन्द लैम्पस् स्थित संस्कृति भवन में आयोजित बहन बचाओ गोष्ठी में शि
अपने-अपने विचार
कार्यक्रम के प्रारम्भ में
बजाज का संदेश सुनाया
जिसमें उन्होंने कहा कि आ
ठीक 2 वर्ष पूर्व शब्दम् संस्थ
बहन बचाओ अभियान प्रारम्भ किया था। जिसमें उन्हो
बहन सशक्त कैसे हो?, बहन के अधिकारों की रक्षा कैसे हो?, राष्ट्र निर्माण में बहन की भूमिका कैसे हो? आदि बिन्दुओं पर बात की थी
विचार गोष्ठी में शिकोहाबाद ज्ञानदीप सी.सेकेण्डरी स्कूल से आशी
भगवती देवी कन्या विद्यालय से कुमकु
पालीवाल, पुरातन सरस्वती विद्या मन्दिर के प्रधानाचार्य अशोक कुमार, ब्लूमिंग बर्ड्स से राजपचौरी, सिरसागंज से ब्राइट

जीवन में बहन का महत्व है सबसे ज्याद
गोष्ठी
आदि मौजूद
कार्यक्रम का संचालन दीपक ने किया।

प्रश्नमंच

शब्दम् उपाध्यक्ष नन्दलाल पाठक ने प्रश्नमंच की व्याख्या इस तरह से की है:

भारतीय परम्परा में 'वादे–वादे जायते तत्वबोध' की व्यापक स्वीकृति है। यह वैज्ञानिक भी है, क्योंकि चर्चा, बात–चीत, सम्वाद, वार्तालाप और प्रश्नोत्तर, यही मार्ग है वक्ता और श्रोता के बीच पुल बनाने का।

विश्व साहित्य को भारत की सर्वोत्तम देन उपनिषद साहित्य है और उपनिषद का पूरा स्वरूप प्रश्नोत्तर पर आधारित है। उपनिषद का अर्थ है, गुरु के निकट शिष्य का बैठना, प्रश्न करना, उत्तर सुनना, अपनी खोज को संतुष्ट करना। यह बहुत वैज्ञानिक तरीका है।

यूनान में यह बहुत व्यापक रहा। यूनानी 'डायलॉग' विश्वप्रसिद्ध है। चीन में भी शिक्षा में प्रश्नोत्तर को बहुत महत्व मिला है।

तिब्बत की पुरानी शिक्षा पद्धति में परीक्षार्थी की प्रश्न पूछने की शक्ति की परीक्षा ली जाती है। परीक्षार्थी एक बोर्ड के सामने उपस्थित होता है। वाद, संवाद, प्रतिवाद सब प्रस्तुत करता है और बोर्ड के सदस्य उसकी सामर्थ्य पर उसे अंक देते हैं।

मन से मन तक पुल बनाने का सर्वोत्तम साधन प्रश्न और उत्तर हैं। जिस मन में प्रश्न नहीं उठते, वह ऊसर है।

भारत का महान ग्रन्थ भगवत गीता–

विजयी छात्र–छात्राओं के साथ समूह छायांकन।

पुरस्कार प्राप्त करती छात्रा।

श्रीमद्भागवत प्रश्नोत्तर ही तो है।

'शब्दम्' प्रश्नमंच आज जनपद के छोटे–बड़े विद्यालयों तक पहुंच गया है। देशभक्ति, प्रकृति एवं संस्कृति, भारतीय त्योहार–उत्सव, हिन्दी भाषा, साहित्य–व्याकरण, रामायण, गीता, महाभारत आदि पर आधारित प्रश्न इस प्रश्नमंच कार्यक्रम का आधार हैं।

प्रश्नमंच कार्यक्रम के उद्देश्य

- छात्र छात्राओं के मध्य हिन्दी व हिन्दी साहित्य उपनिषद के प्रति सम्मान, जिज्ञासा, उत्साह एवं रुचि पैदा करना।
- विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर हिन्दी के ज्ञान को बढ़ावा देना।
- हिन्दी का प्रचार–प्रसार करना।

शब्दम् द्वारा अभी तक लगभग 170 विद्यालय–महाविद्यालयों के 85 हजार छात्र–छात्राओं के मध्य प्रश्नमंच कार्यक्रम आयोजित किये जा चुके है।

वर्ष 2014–15 में भाग लेने वाले महाविद्यालयों /विद्यालयों के नाम इस प्रकार हैं।

विद्यालय

शिकोहाबाद के यंग स्कॉलर्स एकेडमी,

ज्ञानदीप सीनि. सेकेण्डरी स्कूल,

मधुमाहेश्वरी कन्या विद्यालय, राज कान्वेन्ट पब्लिक स्कूल,

ठा. तारा सिंह इण्टर कॉलेज,

बी.डी.एम.इण्टर कॉलेज,

प्रह्लादराय टीकमानी सरस्वती विद्या मन्दिर, ज्ञान ज्योति पब्लिक स्कूल,

पुरातन सरस्वती विद्या मन्दिर,

रामशरण विद्या निकेतन, डिवाइन इण्टरनेशनल एकेडमी,

इन्दिरा मैमोरियल पब्लिक स्कूल,

प्रश्न का उत्तर देता छात्र।

उत्तर देने को उत्साहित छात्राएं।

सिरसागंज के ब्राइट स्कॉलर्स एकेडमी,

भविष्य ज्योति पब्लिक स्कूल,

महाविद्यालय

शिकोहाबाद के चौ. रघुवर दयाल डिग्री कॉलेज, नारायण महाविद्यालय,

आदर्श कृष्ण महाविद्यालय,

बी.डी.एम. महाविद्यालय,

सन्त जनूबाबा स्मारक महाविद्यालय,

ओ३म् डिग्री कॉलेज,

जे.एस. डिग्री कॉलेज,

पालीवाल महाविद्यालय,

मैनपुरी के कुँ. आर.सी. महाविद्यालय

जूनियर, इंटरमीडिएट और ग्रेजुएट वर्ग तक के लगभग 5000 छात्र–छात्राओं ने उत्साह के साथ अपने–अपने विद्यालय में आयोजित प्रतियोगिता में भाग लिया।

विद्यालय–महाविद्यालयों ने कार्यक्रम में पूर्ण सहयोग दिया, जिसके लिए 'शब्दम' आभारी है। प्रश्नमंच कार्यक्रम 'शब्दम्' सलाहकार श्री मंजर–उल वासै एवं शब्दम् टीम के ऊर्जान्वित प्रयास के कारण उपर्युक्त सफलता तक पहुंचा है।

एकता के सूत्र में पिरोने का काम करती है हिंदी

हिंदी का प्रयोग करना हमारा जन्म सिद्ध अधिक

हिन्दी को देश की राष्ट्रभाषा होने का गौरव प्राप्त होना चाहिये

एकता के सूत्र में पिरोने का काम करती है हिन

न्दी को प्राप्त होना चाहिए देश की राष्ट्रभाषा होने का गौरव : सक्सेन

बुधवार को शिकोहाबाद की यंग स्कॉलर्स एकेडमी में हिन्दी प्रश्न मंच में विजेता छात्रों के साथ निर्णायक मंडल। • हिन्दुस्तान

हिन्दी प्रश्न मंच में दिखाया हुनर

रक्षाबंधन, जन्माष्टमी से संबंधित सवाल पूछे

जनपद स्तर प्रश्नमंच प्रतियोगिता
(स्नातक-स्नातकोत्तर स्तर)

- **कार्यक्रम विषय** : जनपद स्तर प्रश्नमंच प्रतियोगिता (स्नातक–स्नातकोत्तर स्तर)
- **दिनांक** : 19.03.2015
- **स्थान** : बी.डी.एम.म्यू. कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय शिकोहाबाद।
- **विजेता टीम** : नारायण महाविद्यालय शिकोहाबाद।
- **संयोजन** : बी.डी.एम.म्यू. कन्या महाविद्यालय एवं शब्दम्

पूर्वी हिंदी की ३ (तीन) बोलियों के नामबताइये ? - अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी

यह प्रश्न जब जनपद स्तरीय प्रश्न मंच प्रतियोगिता में पूछा गया तो हर तरफ सोच का माहौल बन गया। इस तरह के ज्ञानवर्धक प्रश्नों के कारण ही शब्दम् संस्था की तरफ से आयोजित किया जानेवाला कार्यक्रम "प्रश्नमंच" सदा से ही लोगों के बीच काफी लोकप्रिय रहा है। और जब बात जनपद स्तर की हो तो फिर तो उत्साह देखते ही बनता है। इस बार जनपद स्तरीय स्नातक–स्नातकोत्तर प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन बी.डी.एम.म्यू. कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय में किया गया। इस कार्यक्रम में शिकोहाबाद के आदर्श कृष्ण महाविद्यालय, नारायण महाविद्यालय, शांतिदेवी आहूजा महाविद्यालय, जे. एस. इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, माँ अंजनी इंस्टीट्यूट, बी.डी.एम.म्यू. कन्या स्नातकोत्तर, संत जनूबाबा स्मारक महाविद्यालय एवम्

विजेता टीम के साथ समूह छायांकन।

विभिन्न विद्यालयों की टीमों एवं शिक्षकों के साथ समूह छायांकन।

प्रश्न का उत्तर देती छात्रा।

राजकीय महिला महाविद्यालय सिरसागंज जैसे जानेमाने महाविद्यालायों ने भाग लिया। प्रश्नमंच उपसमिति के अध्यक्ष श्री मंज़र–उल वासै ने हिन्दी भाषा और साहित्य को केन्द्र में रखते हुए भारतीय संस्कृति और चरित्र निर्माण से सम्बन्धित स्तरीय प्रश्न पूछे। डा. महेश आलोक ने संचालन में सहयोग तो किया ही, साथ ही प्रश्नमंच उपसमिति के उपाध्यक्ष श्री अरविन्द तिवारी के साथ निर्णायक मण्डल में अहम भूमिका निभायी।

राजकीय महिला महाविद्यालय, सिरसागंज एवं नारायण महाविद्यालय, शिकोहाबाद ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए सभी टीमो ंको पीछे छोड़ते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। दोनों ही टीमों के प्रथम आने पर ये प्रतियोगिता जारी रही। संचालक श्री मंज़र–उल वासै ने दोनों ही टीमों से दो–दो प्रश्न और पूछे, जिसमें नारायण महाविद्यालय ने सही उत्तर दे कर जनपद स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम अध्यक्ष श्री उमाशंकर शर्मा, संयोजक डॉ. कांता श्रीवास्तव एवं 'शब्दम' सलाहकार समिति ने विजेता टीम को जनपद स्तरीय प्रमाणपत्र प्रदान किया। साथ ही प्रत्येक प्रतिभागी को एक प्रमाणपत्र एवं लेखनी प्रदान की गयी। इस अवसर पर प्रश्नमंच उपसमिति के सदस्य डा. विजय 'निर्मल' एवं श्री निर्दोष कुमार 'प्रेमी' भी उपस्थित रहे।

"

बीते कल से सीखो, आज के लिए जियो,
आने वाले कल के लिए आशावन बनो।
महत्त्वपूर्ण बात यह है कि प्रश्न पूछना,
मत छोड़ो।

-अलबर्ट आइंस्टीन

"

उत्तर देने के बाद निर्णय की प्रतीक्षा में।

जनपदीय प्रश्नमंच कार्यक्रम में उपस्थित विभिन्न विद्यालयों के शिक्षक एवं छात्र–छात्राएं।

एनडी प्रथम और जीजीडीसी रहे द्वितीय

विजेता टीम के छात्र-छात्रा प्रमाणपत्र के साथ।

शिकोहाबाद (ब्यूरो)। साहित्यिक संस्था शब्दम् द्वारा जनपदीय हिंदी प्रश्नमंच का आयोजन बीडीएम म्युनिसिपल कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय में किया गया। इसमें नारायण महाविद्यालय, श्रीमती शांतिदेवी आहूजा, संत जनू बाबा महाविद्यालय, आदर्श कृष्ण महाविद्यालय, राजकीय महिला महाविद्यालय सिरसागंज, मा... ...जनी इंस्टीट्यूट ऑफ एजूकेशन, ...डीएम म्यू स्नातकोत्तर महाविद्यालय ... टीमों ने प्रतिभाग किया। अध्यक्षता ...शंकर शर्मा ने की। शुभारंभ सरस्वती ... के चित्र पर दीप प्रज्ज्वलन एवं माल्यार्पण के साथ हुआ। कार्यक्रम ... चरणों में आयोजित किया गया ... चरण के पश्चात नारायण महा... और राजकीय महिला महावि... सिरसागंज की टीम चार-चार अंक ... प्रथम स्थान पर थी। इसके बाद ... टीमों से दो-दो प्रश्न पूछे गए, जि... नारायण महाविद्यालय ने सही उत्तर दे... वर्ष 2015 की जनपदस्तरीय प्रतियोगिता ... में प्रथम स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम संयोजिका प्राचार्य डा. कांता श्रीवास्तव ने ... शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज को धन्यवाद दिया। संचालन मंजर उल वासै ... व डा. महेश आलोक ने ...

प्रश्न मंच प्रतियोगिता में एनडी प्रथम, महिला कॉलेज रहा द्वितीय

प्रतियोगिता में नारायण महाविद्यालय रहा प्रथम

सतत एवं स्थायी कार्यक्रम

जनपदस्तरीय प्रश्नमंच
(स्नातकोत्तर स्तर)

- **कार्यक्रम विषय** : जनपद स्तरीय हिन्दी प्रश्नमंच
- **दिनांक** – 21 दिसम्बर 2015
- **अध्यक्षता** : श्री अरविन्द तिवारी ● **विशिष्ट अतिथि** : डॉ. महेश आलोक
- **संचालक एवं संयोजक** : श्री मंज़र–उल वासै
- **स्थान** : हिन्द परिसर स्थित संस्कृति भवन, शिकोहाबाद। ● **संयोजन** : शब्दम्

पाँचवी महाविद्यालय जनपदीय स्तर की हिन्दी प्रश्नमंच प्रतियोगिता में गतवर्ष की तरह इस वर्ष भी नारायण महाविद्यालय, शिकोहाबाद ने प्रथम स्थान प्राप्त कर शील्ड प्राप्त की। शब्दम् द्वारा हिन्द लैम्प्स स्थित संस्कृति भवन परिसर में आयोजित भव्य प्रश्नमंच कार्यक्रम का संचालन मंज़र–उल वासै ने बड़े रोचक ढंग से किया। सरस्वती चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन से शुरू हुआ हिन्दी प्रश्नमंच कार्यक्रम गुनगुनी धूप में उत्तरोत्तर गरिमामय होता चला गया।

इस कार्यक्रम हेतु मंच को विशेष रूप से सजाया गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता अरविन्द तिवारी ने की तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. महेश आलोक के अलावा सहसंयोजक के रूप में प्रश्नमंच समिति के निर्दोष प्रेमी भी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में शिकोहाबाद के

बोर्ड पर प्रश्न लिखते मंजर उलवासै।

जनपद स्तरीय प्रमाण पत्र के साथ विजयी टीम।

समूह छायांकन।

पालीवाल डिग्री कॉलेज, नारायण डिग्री कालेज, ए.के. कॉलेज, बी.डी.एम. गर्ल्स डिग्री कालेज, जे. एस. कालेज ऑफ एजूकेशन, ओम् डिग्री कॉलेज ने हिस्सा लिया।

जनपद स्तरीय प्रश्नमंच प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान संयुक्त रूप से जे.एस. कॉलेज ऑफ एजूकेशन और ए.के. महाविद्यालय ने प्राप्त किया। तृतीय स्थान पर बी.डी.एम. डिग्री कॉलेज रहा। सभी प्रतियोगियों को प्रमाण पत्र के साथ–साथ उपहार भी प्रदान किया गया। कार्यक्रम में डॉ.टी.एन. सिंह, लक्ष्मीनारायण यादव, सनातन सिंह ओझा, दिनेश यादव, श्रीमती अनीता, दर्शना कुमारी आदि उपस्थित थे। शब्दम् संस्था संयोजक दीपक औहरी ने कार्यक्रम की महत्ता बताते हुए कहा कि कार्यक्रम पूर्ण रूप से पारदर्शी बनाया गया है। प्रश्नमंच संयोजक मंजर उल वासै ने बताया कि प्रश्न अक्सर प्रतियोगिताओं में पूछे जाते हैं। प्रश्नमंच का उद्देश्य छात्र–छात्राओं की परीक्षा लेना नहीं है बल्कि उनका ज्ञानवर्द्धन करना है। अध्यक्ष अरविन्द तिवारी ने बताया कि इस प्रतियोगिता में सभी स्तर के कठिन और सरल दोनों तरह के प्रश्न शामिल थे।

नारायण कॉलेज ने जीती प्रश्नमंच प्रतियोगिता

प्रतियोगिता में उपस्थित हुए कई कॉलेज के विद्यार्थी

प्रश्नमंच में विजयी रहा नारायण कॉलेज

प्रश्नमंच में नारायण कॉलेज बना चैंपियन

शब्दम के प्रश्नमंच में नारायण कॉलेज ने बाजी मारी

सतत एवं स्थायी कार्यक्रम

जनपदस्तरीय इण्टरमीडिएट प्रश्नमंच

- **कार्यक्रम विषय** : जनपद स्तरीय इण्टरमीडिएट प्रश्नमंच
- **दिनांक** – 19 दिसम्बर 2015
- **अध्यक्षता** : डॉ. महेश आलोक ● **विशिष्ट अतिथि** : श्री अरविन्द तिवारी ● **संयोजक** : श्री मंजर उल वासै
- **विजेता टीम** : प्रहलाद राय टीकमानी सरस्वती इ0 कॉलेज, शिकोहाबाद
- **स्थान** : संस्कृति भवन, हिन्द परिसर, शिकोहाबाद ● **संयोजन** : शब्दम्

हिन्द परिसर स्थित संस्कृति भवन में फिरोजाबाद जनपद स्तरीय इण्टरमीडिएट तक के छात्र–छात्राओं के बीच हिन्दी प्रश्नमंच का आयोजन किया गया जिसमें प्रहलाद राय टीकमानी सरस्वती इण्टर कॉलेज शिकोहाबाद ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान ब्राइट स्कालर्स एकेडमी सिरसागंज को मिला। तृतीय पुरातन सरस्वती विद्या मन्दिर शिकोहाबाद को मिला।

हिन्दी की प्रगति हेतु शब्दम् का लोकप्रिय कार्यक्रम हिन्दी प्रश्नमंच वर्ष पर्यन्त विभिन्न विद्यालयों में आयोजित किया जाता है तत्पश्चात वर्ष के अंत में वर्ष भर चले विद्यालयों के मध्य एक जनपद स्तरीय प्रश्नमंच कार्यक्रम आयोजित किया जाता है जिसमें विजेता टीम को जनपदीय प्रमाण पत्र, शब्दकोश तथा लेखनी उपहार स्वरूप प्रदान कर सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष जनपद स्तरीय प्रश्नमंच में शिकोहाबाद के प्रहलाद राय टीकमानी सरस्वती इण्टर कॉलेज, पुरातन सरस्वती विद्या मन्दिर, यंग स्कॉलर्स एकेडमी, मधु माहेश्वरी सरस्वती

विजेता टीम के साथ शब्दम् सलाहकार।

प्रश्न के उत्तर के लिए अपनी टीम के साथ विचार–विमर्श करते छात्र–छात्राएं।

प्रश्न का उत्तर देता छात्र।

कन्या उ. मा. विद्या मन्दिर, बी.डी.एम. इण्टर कॉलेज, ज्ञानदीप सीनियर सेके. पब्लिक स्कूल, ठा. तारा सिंह इण्टर कॉलेज तथा सिरसागंज से ब्राइट स्कालर्स एकेडमी, भविष्य ज्योति पब्लिक स्कूल सहित कुल नौ विद्यालयों ने भाग लिया।

जनपद स्तरीय प्रश्नमंच कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. महेश आलोक ने की तथा विशिष्ट अतिथि अरविन्द तिवारी थे। प्रश्नमंच के संयोजक मंज़र–उल वासै ने बड़े रोचक ढंग से इस कार्यक्रम को आयोजित किया। जिसकी सराहना छात्र–छात्राओं के साथ संभागी विद्यालयों के शिक्षकों ने भी की। प्रथम स्थान के लिए मुकाबला उस समय रोचक हो गया जब दो विद्यालयों प्रहलाद राय टीकमानी शिकोहाबाद तथा ब्राइट स्कालर्स एकेडमी सिरसागंज ने समान अंक प्राप्त किए। बाद में अतिरिक्त प्रश्न पूछे गए तब जाकर निर्णय हुआ। इस कार्यक्रम की पारदर्शिता की सराहना सभी ने की।

डॉ. महेश आलोक ने बतौर अध्यक्ष बोलते हुए उन विद्यालयों की निन्दा की जो विद्यालय में हिन्दी बोलने पर जुर्माना लगाते हैं। अरविन्द तिवारी ने शब्दम् संस्था का परिचय देते हुए कहा कि हिन्दी प्रश्नमंच इस संस्था का

समूह छायांकन।

सर्वाधिक लोकप्रिय कार्यक्रम है। जिसने हजारों छात्रों को लाभान्वित किया है।

संयोजक मंज़र–उल वासै ने प्रश्नों के निर्माण और उद्‌गम की प्रक्रिया के बारे में बताया कि पारदर्शिता के साथ हिन्दी का विकास हमारा प्रथम लक्ष्य है।

शब्दम् के दीपक औहरी ने आगुन्तकों का स्वागत करते हुए इस कार्यक्रम की महत्ता पर प्रकाश डाला। छात्र–छात्राओं की सकारात्मक प्रतिक्रियाओं ने कार्यक्रम को बढ़ाया। कार्यक्रम में कृपाशंकर शर्मा 'शूल', शिव कुमार सिंह, श्री सुनील शर्मा, रूबी यादव, सुमन सिंह, गुंजन चतुर्वेदी, साधना मिश्रा, सरिता यादव, अनिल कुमार, हरी सिंह उपस्थित रहे।

जनपद स्तरीय इण्टरमीडिएट प्रश्नमंच कार्यक्रम सम्पन्न

शब्दम् द्वारा आयोजित जनपद स्तरीय इण्टरमीडिएट प्रश्नमंच कार्यक्रम सम्पन्न

प्रह्लादराय टिकमानी के छात्र अव्व

विविधा

'रंग गाढ़े भरो एकता के' प्रतियोगिता

- **कार्यक्रम विषय** : 'रंग गाढ़े भरो एकता के' प्रतियोगिता
- **दिनांक** : 10 अगस्त 2015
- **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन
- **चयन समिति** : डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर', श्री मंज़र–उल वासै, श्री अरविन्द तिवारी
- **संयोजन** : शब्दम्

शब्दम् द्वारा 10 अगस्त 2015 को, हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन में ''देश प्रेम पर आधारित रचनाएँ'' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में देश प्रेम की भावना जागृत करना एवं स्वतन्त्रता दिवस तक सभी विद्यालयों में देश प्रेम का महत्त्व बताना एवम् वातावरण तैयार करना था।

कार्यक्रम तीन चरणों में आयोजित किया गया, जिसमें शिकोहाबाद एवं सिरसागंज के 16 विद्यालयों–महाविद्यालयों के लगभग 36 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने देशप्रेम पर आधारित स्वरचित रचनाओं के साथ–साथ अन्य जाने–माने लेखकों की रचनाएँ भी सुनायीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री उमाशंकर शर्मा ने की।

निर्णायक मण्डल की भूमिका में फिरोजाबाद से पधारे डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर', शिकोहाबाद से श्री अरविन्द तिवारी एवं

समूह छायांकन।

कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुति देती हुई छात्रा।

कार्यक्रम में निर्णायक मण्डल एवं मुख्य अतिथि के समक्ष प्रस्तुति देता छात्र।

श्री मंज़र–उल वासै थे, जिन्होंने प्रतियोगिता का मूल्यांकन, विषयवस्तु, प्रस्तुतिकरण एवं भाषा के आधार पर किया।

कार्यक्रम का परिणाम–

प्रथम वर्ग

प्रथम – राहत अली– प्रहलाद राय टीकमानी सरस्वती विद्या मन्दिर, शिकोहाबाद।

द्वितीय– शिवानी–यंग स्कालर्स एकेडमी, शिकोहाबाद।

तृतीय– आकर्षण उपाध्याय– ब्राइट स्कालर्स एकेडमी, सिरसागंज।

द्वितीय वर्ग

प्रथम– अंजली– मधु माहेश्वरी कन्या विद्यालय, शिकोहाबाद।

द्वितीय– सैजल जैन–डिवाइन इण्टरनेशनल एकेडमी, सिरसागंज।

तृतीय– करश्मिा– राजकान्वेंट पब्लिक स्कूल, शिकोहाबाद।

तृतीय वर्ग

प्रथम– निधि यादव– एम.डी.जैन इण्टर कॉलेज, सिरसागंज।

द्वितीय–हर्षिता गुप्ता– आदर्श कृष्ण महाविद्यालय, शिकोहाबाद।

तृतीय– कौशल यादव– पालीवाल महाविद्यालय, शिकोहाबाद।

निर्णायक मण्डल के सदस्य श्री मंजर–उल वासै ने बच्चों को सम्बोधित करते हुए उन्हें उनकी प्रस्तुति में किस प्रकार सुधार किया जा सकता है विषय पर प्रकाश डाला।

निर्णायक मण्डल के अन्य सदस्य श्री रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' ने भी इस अवसर पर बच्चों को सम्बोधित किया। श्री उमाशंकर शर्मा ने अपना अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत किया। ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल की निदेशिका एवं शब्दम् सलाहकार मण्डल की सदस्य डॉ. रजनी यादव ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं प्रस्तुत की गई कविताओं के कुछ अंश

'लाज मेरे हिन्द देश की रखियो,

दुश्मन खड़ा ताकता इससे जरा सजग तुम रहियो।

'लाज मेरे हिन्द देश की रखियो,

अब तक हमने जिसे दुलारा, उसने ही आज हमें ललकारा

आस्तीन का साँप है बंधु, इससे बचकर रहियो।

'लाज मेरे हिन्द देश की रखियो।।

–राहत अली (प्रथम) सरस्वती विद्या मन्दिर, शिकोहाबाद

हिन्द देश के निवासी, सभी जन एक हैं।
रंग, रूप, वेश भाषा, चाहे अनेक हैं।
बेला, गुलाब, जूही, चम्पा, चमेली
प्यारे–प्यारे फूल गुथे, माला में एक हैं।

–अंजली (प्रथम) मधु माहेश्वरी कन्या विद्यालय, शिकोहाबाद

माटी का कर्ज़ चुकाना है,
माटी का कर्ज़ चुकाना है।
जिस उपवन में हम–तुम खेले,
उस उपवन को महकाना है।
कुछ कर्ज़ हवा का तुम पर है,
कुछ कर्ज़ धूप का भी यारो।
कुछ कर्ज़ गाँव की गलियों का,
कुछ कर्ज़ खेत का भी यारो।

–आकर्षण (तृतीय) ब्राइट स्कालर्स एकेडमी, सिरसागंज

रंग गाढ़े भरो एकता के
साधना में कमी आ गई है।
हो रहा प्रदूषित चमन भी
धारणा में कमी आ गई है।।

–शिवानी (द्वितीय) यंग स्कॉलर्स एकेडमी, शिकोहाबाद।

पुरस्कार प्राप्त करती छात्रा।

निधि और सैजल रहे अव्वल

हिन्द परिसर में किया गया "देश प्रेम पर आधारित रचनाओं" का कार्यक्रम

राहत, सैजल और निधि रहे प्र

निधि यादव व सैजल जैन ने मारी बाजी

शब्दम् द्वारा देश प्रेम पर आधारित रचनाएं' कार्यक्रम का आयोजन

शब्दम् दस दिवसीय ग्रीष्मकालीन शिविर

- **कार्यक्रम विषय** : शब्दम् दस दिवसीय ग्रीष्मकालीन शिविर
- **दिनांक** : 5 जून से 15 जून 2015
- **स्थान** : हिंद लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद
- **संयोजन** : शब्दम्

शब्दम् संस्था ने इस वर्ष एक नया प्रयोग करते हुए दस दिवसीय (5 जून से 15 जून 2015) ग्रीष्म कालीन शिविर का आयोजन किया। शिविर में 6 वर्ष से लेकर 65 वर्ष तक के कुल 77 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

शिविर में प्रतिभागियों के भीतर छुपी हुई प्रतिभा को निखारने के लिए विभिन्न प्रकार की कक्षाएँ चलाई गयीं।

सिलाई कला–शिक्षिका मधु शुक्ला ने प्रतिभागियों को सिलाईकला के गुण सिखाए, जिसमें सिलाई मशीन का तकनीकी ज्ञान एवं सिलाई मशीन के रख रखाव की जानकारी, सिलाई वस्त्रों में प्रारम्भिक टांके, ब्लाऊज़ एवं पेटीकोट बनाना था ताकि छोटे–छोटे कार्यों के लिए बालिकाएँ किसी पर निर्भर न रहें।

सौंदर्य वर्धन, साड़ी पहनने की कला एवं केश सज्जा–शिक्षिका मधु शुक्ला ने सौंदर्य वर्धन के लिए ब्लीच, फ़ेसियल, मेनीक्योर, पेडीक्योर, वैक्सींग आदि पर प्रशिक्षण दिया। साड़ी पहनने की कला के अंतर्गत चार तरह की भारतीय साड़ी बंगाली, मराठी, सीधेपल्ले एवं उल्टेपल्ले के बारे में प्रशिक्षित किया। केश सज्जा के अंतर्गत फिशवॉन, बटरफ्लाई, रूमालवाला जूड़ा, फ़ोरलेअर चोटी, सिक्सलेअर चोटी, बंगाली जूड़ा, खजूर चोटी, फ्रेंच चोटी के बारे में प्रशिक्षण दिया।

मेहँदी कला–शिक्षिका कु. अमरीशा ने ऐरविक, इंडोऐरविक, बटिक, रजवाड़ी विधि

प्रमाणपत्र के साथ समूह छायांकन

नृत्य करती महिलाएँ

से छात्राओं को मेहँदी लगाना सिखाया।

पौधशाला एवं पौधे लगाना–शिक्षक पुष्पेन्द्र शर्मा ने जानकारी दी कि पौधशाला वानिकी विकास का चेतना केन्द्र है। इसके अंतर्गत गमले में पौधे लगाना, गमले में कटिंग के पौधे लगाना, खाद–मिट्टी मिश्रण तैयार करना एवं इसके अनुपात की जानकारी दी। साथ ही बीज द्वारा, कटिंग द्वारा एवं डिवीज़न द्वारा पौधों का प्रसारण करने के तरीक़ों के बारे में भी प्रशिक्षण दिया।

काष्ठकला–शिक्षक दुर्ग सिंह ने विद्यार्थियों को कुर्सी, मेज़, बॉक्स, स्टूल एवं गोल टेबल बनाने का प्रशिक्षण दिया। इसके अंतर्गत आरी, गुनिया, हेमर, पटासी, निहानी, ड्रिलमशीन, प्लेनर, पेचकस, प्लास, इंचीटेप एवं शिकन्जा आदि काष्ठकला औज़ारों के प्रयोग की जानकारी दी।

भारतीय नृत्य की कुछ हरकतें–नृत्य शिक्षिका कु. गीतिका चतुर्वेदी ने छात्राओं को नृत्य कला के विषय में जानकारी दी। ''मैया यशोदा ये तेरा कन्हैया' जैसे कलात्मक गीत पर छात्राओं को नृत्य सिखाया गया। नृत्य में बच्चों को सेमी क्लासिकल धुनों पर नृत्य का प्रशिक्षण दिया गया। नृत्य को सीखने की ललक उम्र की सीमाओं को पार करके 6 वर्ष की दो बालिकाओं से लेकर 65 वसंत देख चुकी श्रीमती माया शर्मा तक पहुंची जिन्होंने प्रतिदिन बिना अनुपस्थित हुए नृत्य की शिक्षा ग्रहण की।

ग्रीष्मकालीन शिविर कैम्प के समापन पर सभी प्रतिभागियों के मन में यही टीस थी कि काश यह ग्रीष्म कालीन शिविर कुछ दिन और चल जाता। कैम्प के समापन पर प्रतिभागियों को शब्दम् प्रमाणपत्र और लेखनी से सम्मानित किया गया।

सौंदर्यीकरण कक्षा का दृश्य

ग्रीष्मकालीन शिविर में छात्राओं ने सीखे गुर

ग्रीष्मकालीन शिविर समापन समारोह

काश ये शिविर कुछ और दिन तक चलत

ग्रीष्मकालीन शिविर समापन समारोह

ग्रीष्मकालीन शिविर में प्रतिभा निखार रहे बच्चे

त्य के गुर सीख रहीं

कमलनयन बजाज की जन्मशती पर हिन्द लैम्प्स में भव्य आयोजन

- **कार्यक्रम विषय** : बजाज उद्योगों के शिल्पी एवं हिन्द लैम्प्स के संस्थापक कमलनयन बजाज की जन्मशती पर हिन्द लैम्प्स में भव्य आयोजन
- **दिनांक** : 23 जनवरी 2015 ● **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद
- **संयोजन** : शब्दम्

'यदि हमारे द्वारा उठाये गये कदम देशहित के विरुद्ध हों तो मैं उनका विरोध करूँगा और उनमें किसी तरह भागीदार नही होऊँगा ,भले ही उसमें नुकसान क्यों न हो, हम उद्योगपति जो कुछ भी करें ,वह मुख्य रूप से देशहित के लिए होना चाहिए।'

—कमलनयन बजाज

कुशल उद्योगपति एवं राजनीतिज्ञ, हिन्दी एवं संस्कृति प्रेमी, मौलिक चिंतक एवं सच्चे गांधीवादी, बजाज उद्योगों के शिल्पी एवं हिन्द लैम्प्स के संस्थापक कमलनयन बजाज की जन्मशती समारोह के आयोजन का शुभारम्भ 23 जनवरी को किया गया। उत्साह और उल्लास के साथ हिन्द लैम्प्स कर्मियो एवं उनके परिवार के सदस्यों द्वारा प्रभातफेरी, मंगलगान एवं परिसर स्थित कमलनयन कानन में उनके चित्र पर पुष्पार्चन,दीप प्रज्वलन, पंचमहाभूतों तथा गौ पूजन, महिला मंडल द्वारा भजन एवं 101 वृक्षारोपण कर किया गया। तत्पश्चात श्री सिद्धेश्वरनाथ मन्दिर में श्री गणेश एवं अन्य विग्रहों का पूजन, रुद्राभिषेक, श्री विष्णुसहस्रनाम एवं श्रीमद्‌भगवद्‌गीता का पाठ एवं प्रसाद वितरण किया गया।

'श्री कमलनयन बजाज' पर विशेष व्याख्यान का आयोजन हिन्द लैम्प्स लिमिटेड,

कमनलयन बजाज के विचारों पर प्रकाश डालते श्री एस.के. शर्मा।

कमलनयन बजाज जन्मशती पत्रिका का विमोचन करते हिन्द लैम्प्स के पदाधिकारीगण।

कमनलयन कानन वन में वृक्षारोपण करतीं हिन्द परिसर की महिलाएं।

शिकोहाबाद में किया गया। इस अवसर पर श्री कमलनयन बजाज के जीवन पर छायांकित लघु फिल्म का प्रदर्शन किया गया तथा 'कमलनयन बजाज जीवनी' पुस्तक का विमोचन किया गया। उनके जीवन के विविध पक्षों की चित्र–प्रदर्शनी भी लगाई गई।

बजाज इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड एवं हिन्द लैम्प्स के चेयरमैन शेखर बजाज ने अपने ऑडियो संदेश में कहा 'कमलनयनजी की दूरदर्शिता और सोच का फल था कि उन्होंने 1951 में हिन्द लैम्प्स की आधारशिला, अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों जैसे –फिलिप्स हॉलैण्ड, क्राम्पटन यू.के.,जी. ई. सी., यू.के. एवं माज्दा के साथ शिकोहाबाद जैसे पिछड़े क्षेत्र में रखी। उन्होंने बजाज की अन्य कंपनियों जैसे –बजाज ऑटो, बजाज इलेक्ट्रिकल्स, हरक्यूलिस हॉइस्टस एवं बजाज सेवाश्रम आदि की स्थापना की। सभी कंपनियां प्रबंधन और श्रमिक वर्ग के मेहनत एवं सहयोग से मेरे चार भाइयों और भतीजों के निर्देशन में अच्छा प्रदर्शन कर रही हैं।

किरण बजाज ने संदेश में कहा कि 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना के साथ जब हमारी सोच होगी तभी हम आगे बढ़ेंगे एवं संकीर्ण मानसिकता के बंधनों से ऊपर उठेंगे। हमें यह प्रण करना है कि हम अपने सिद्धान्तों के साथ समझौता नहीं करेंगे और साथ मिलकर काम करेगें तथा निजी स्वार्थों को दरकिनार करते हुए हिन्द लैम्प्स को उन्नत, पुष्पित एवं पल्लवित बनाते हुए आगे बढ़ने की कोशिश करेंगे।'' उन्होंने कमलनयनजी के हिंदी प्रेम को दर्शाते हुए कहा कि हिन्दी के प्रबल समर्थक होने के कारण संसद में अपने सारे भाषण उन्होंने हिन्दी में दिए और उन्होंने अन्य सदस्यों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित किया। उनका विश्वास था ''राष्ट्रभाषा प्रचार का कार्य राष्ट्रनिर्माण का कार्य है। राजनैतिक गुलामी के कारण हमारी एकता को जितनी चोट पहुँची और बड़े–बड़े घाव हुए, उन पर राष्ट्रभाषा मरहम का कार्य करेगी।''

सहायक महाप्रबन्धक श्याम कृष्ण शर्मा ने कहा कि बजाज इलेक्ट्रिकल्स के बारे में कमलनयन जी की अद्भुत व्यवसाय क्षमता और सूझबूझ का परिचय मिलता है।हम लोगों ने स्वतंत्रता आन्दोलन में हिस्सा तो नहीं लिया परन्तु एक कर्मठ व देशहित को सर्वोपरि रखने वाला व्यक्तित्व जिसके द्वारा शिकोहाबाद में ये कारखाना स्थापित किया गया, हमें गौरवान्वित करता है कि हम एक सच्चे देशभक्त – उद्योगपति कमलनयन बजाज द्वारा स्थापित इस कारखाने में कार्य करते हैं और उनके प्रेरणादायक कार्य का अनुसरण कर इस कारखाने को एक नई ऊंचाई तक ले जाएंगे। चेयरमैन श्री शेखर बजाज का संदेश बहुत मायने रखता है और

हमारी कमलनयनजी को सच्ची श्रद्धांजलि तभी होगी जब हम सब मिलकर इस कारखाने को लाभ की ओर ले जाने का प्रण करें। आइए एक नये भारत के निर्माण लिए सफल प्रयत्न करें।

कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ। इस पावन अवसर पर हिन्द लैम्प्स परिवार के सभी सदस्यों को उपहार एवं प्रसाद वितरित किया गया।

मुख्य कार्यक्रम से पूर्व पत्रकार वार्ता का आयोजन किया गया।

उपस्थित श्रोतागण।

चित्र प्रदर्शनी।

कमलनयन बजाज के सिद्धांत

- परिवार की प्रतिभा को संवेदनशीलता से पोसो।
- अच्छे साझेदार चुनो और उनसे अच्छी तरह पेश आओ।
- सफल और अनुभवी मित्र और पेशेवर चुनो, उन्हें निदेशक बनाओ और उनकी बात ध्यान से सुनो।
- अपने कर्मचारियों के विकास में पूंजी लगाओ और कंपनी की सामर्थ्य के अनुसार समस्याओं से दूर मत भागो।
- दूसरी पंक्ति भी उतनी ही सफल होती है, जितनी सब से पहली।
- आधुनिक प्रबंधन शैली को अपनाते चलो।
- नुकसान को तेजी से खत्म करो।
- भारत के लिए काम करो। राष्ट्रवादी होने में शर्म महसूस मत करो।
- हमेशा ईमानदार और नैतिकतापूर्ण रहो।

कमलनयन : बजाज इंडस्ट्रीज को पहुंचाया बुलंदियों पर

कमल नयन बजाज की जयंती पर होंगे कार्यक्रम

वक्त की दीवार पर संघर्ष की गा

कमलनयन बजाज की जन्मशताब्दी 23 को

कमलनयन की जयंती पर जुटेंगे दिग्गज

प्रमुख समाजसेवी एवं प्रमुख उद्योगपति का जन्मशदी समारोह 23 से

जानकीदेवी बजाज जयन्ती समारोह

- **कार्यक्रम विषय** : जानकीदेवी बजाज जयन्ती समारोह
- **दिनांक** : 7 जनवरी 2015
- **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर, संस्कृति भवन

जानकीदेवी बजाज की 123वीं जयन्ती पर 'शब्दम्' एवं 'के.सी. क्लब' के संयुक्त तत्त्वावधान में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में जहां युवा प्रतिनिधित्व के तौर पर एन.एस.एस. कैम्प से आए हुए छात्र–छात्राएं थे, वहीं हिन्द लैम्प्स प्रबन्धकगण एवं अन्य विदुज्जन ने भी भाग लिया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ जानकीदेवी बजाज के प्रिय जाप 'ओम नमो नारायणाय' से हुई। इसके बाद मन्दिर समिति ने सभी लोगों के साथ उनका प्रिय भजन 'पायो जी मैंने रामरतन धन पायो....'और जानकीदेवी बजाज लिखित गीत 'यदि मैं सुन्दर होती...' गाया। इस अवसर पर जानकीदेवी बजाज का एक ऑडियो विजुअल दिखाया गया, कि किस प्रकार एक महिला देश के लिए समर्पित भाव से अपना सबकुछ त्याग देती है और अपना सम्पूर्ण जीवन देश, समाज हित में न्यौछावर करती है।

श्री एस. के. शर्मा ने इस अवसर पर जानकीदेवी बजाज के नाम से चल रही संस्थाओं की जानकारी सभागार में दी।

कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ।

जानकीदेवी बजाज पर आधारित पुरस्कार

1. आई.एम.सी. लेड़ीज विंग जानकीदेवी बजाज पुरस्कार

2. जानकीदेवी बजाज की स्मृति में स्थापित महिला और बाल कल्याण एवं उत्थान के लिए जमनालाल बजाज पुरस्कार

जानकीदेवी बजाज जीवन पर आधारित पुस्तकें

मेरी जीवन यात्रा, पत्र व्यवहार, समर्पण और साधना, स्मरणांजलि, एक जीवन्त प्रतिमा,

जानकी सहस्रनाम

जानकीदेवी बजाज के नाम पर संचालित संस्थान

1. जानकीदेवी बजाज सेवा ट्रस्ट, वर्धा
2. जानकीदेवी बजाज ग्राम विकास संस्थान, पूना
3. जानकीदेवी बजाज इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज्, मुंबई
4. जानकीदेवी बजाज विज्ञान महाविद्यालय,

जानकीदेवी बजाज : जीवन परिचय

जानकीदेवी बजाज के धनी व्यक्तित्व एवं उससे भी अधिक विशाल एवं विशद कृतित्व को दो तीन पृष्ठों में समेट पाना गागर में सागर भरने जैसा है।

जानकीदेवी का जन्म जावरा (म. प्र.) के एक धनाढ्य मारवाड़ी वैष्णव परिवार में 7 जनवरी 1893 को हुआ था। उनके माता–पिता रामानुज सम्प्रदाय के एक धार्मिक और उदार परिवार के सदस्य थे। धार्मिक परिवार के होने के नाते जानकीदेवी 6–7 वर्ष की अल्प आयु में भी एकान्त में ओम नमो नारायणाय का जाप किया करती थीं। वे नियमित रूप से पूजा करतीं और मंदिर जाया करती थीं।

उस समय की समसामयिक सामाजिक परम्पराओं और अन्धविश्वास के कारण वे विद्यालय की औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकीं। वे पढ़ना–लिखना सीखना चाहती थीं, अतः उनकी इस इच्छा को देखते हुए उनके पिता गिरधारीलालजी ने उनको घर पर ही पढ़ाने की व्यवस्था कर दी। साढ़े 8 वर्ष की आयु में उनका विवाह वर्धा मध्यप्रदेश में जमनालालजी बजाज के साथ हो गया तथा वे बजाज परिवार में गृह लक्ष्मी बनकर 1902 में अपने ससुराल वर्धा आ गईं।

जानकीदेवी को प्रेरणा देने वाले सबसे बड़े स्रोत उनके पति थे। जमनालालजी एक धनाढ्य व्यवसायी, महात्मा गांधी के अनुयायी, समाज सुधारक, महान देशभक्त और गो भक्त थे। उन्होंने अपनी पत्नी को सामान्य ज्ञान की शिक्षा एवं समसामयिक घटनाओं की जानकारी देने के लिए एक पारसी महिला को उन्हें अखबार पढ़ कर सुनाने के लिए नियुक्त कर दिया। अपने प्रारम्भिक वैवाहिक जीवन में वे सोना–चाँदी ही नहीं वरन् मोती–हीरों से सजी–धजी रहती थीं। उन्होंने तीन पुत्रियों– कमला, मदालसा और उमा और दो पुत्रों – कमलनयन और रामकृष्ण को जन्म दिया ।

उस युग में मारवाड़ी समाज में गृह वधुएं लंबा घूँघट निकालती थीं। 1919 में जमनालालजी ने उन्हें परदा छोड़ने का गांधीजी का निर्देश सुनाया और उन्होंने तत्काल इसका पालन किया। 1921 में 28 वर्ष की आयु में उन्होंने अपने सारे स्वर्ण, रजत, हीरे आदि आभूषण त्याग कर देश को अर्पण किए, और फिर विदेशी कपड़ों को भी त्याग दिया। उनके विदेशी वस्त्र, इन वस्त्रों में उनके घर के, दुकान और मंदिर के वस्त्र सम्मिलित थे, सात दिन तक वर्धा के चौक पर आग में जलाये जाते रहे। उस समय जानकीदेवी को समाज का विरोध और बहिष्कार भी सहन करना पड़ा। तब से पूरा

परिवार खादीमय हो गया।

गांधीजी के सत्य और अंहिसा के आह्वान और राष्ट्र और समाज की उन्नति के लिए गांधीजी की शिक्षाओं का पूर्णतः पालन करने वाली वह प्रथम महिलाओं में से थीं। उन्होंने स्वयं ही खादी पहनी और स्वयं ही चरखा चलाया, अनेकानेक महिलाओं को भी इसके लिए प्रेरित किया एवम् घर–घर जाकर चरखा चलाना सिखाया।

वे स्वयं स्वीकार करती हैं कि 1920 आते–आते जमानालालजी बापू के 'पाँचवें पुत्र' और जानकीदेवी उनकी पाँचवीं पुत्र–वधू बन चुके थे। खादी की उन्नति और गो सेवा के अतिरिक्त कूपदान भी अनके जीवन के महत्वपूर्ण अंग बन गये। उन दिनों हरिजन (जो नाम स्वयं गांधीजी ने दिया था) अस्पृश्य माने जाते थे। पति जमनालाल के निर्देश पर जानकी देवी ने हरिजन को अपने घर में प्रवेश कराया। बजाज परिवार द्वारा वर्धा में बनाये गये लक्ष्मीनारायण मंदिर में विनोबाजी के नेतृत्व में 17 जुलाई 1928 को हरिजन प्रवेश कराया गया। घर में भी हरिजन को रसोई में स्थान दिया गया।

संत विनोबा भावे बजाज परिवार के आध्यात्मिक मार्ग दर्शक थे। जानकीदेवी बजाज, विनोबाजी को अपना गुरू और छोटा भाई मानती थीं।

इनके प्रभाव के कारण ही जानकी देवी दूसरों के लिए मार्गदर्शक बन गईं। उनके व्यक्तित्व का विकास होता गया और उनके कार्य और क्रियाकलाप सारे देश में छा गये। राष्ट्र की सेवा उनके व्यक्तित्व का सबसे महत्वपूर्ण अंग बन गया। उन्होंने अपने पति के मार्ग का अनुसरण किया और स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान बड़ी–बड़ी मीटिंगों को निर्भय होकर सम्बोधित भी किया।

उन्होंने अपनी संतानों को स्वतंत्रता आन्दोलन के यज्ञ में लगा दिया। बड़ी पुत्री कमला उनके साथ बिहार गयीं और वहां अनेक भाषण दिये। उनके बड़े पुत्र एवं बड़ी पुत्र वधू ने स्वतंत्रता संघर्ष में भाग लिया और स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान दोनों को जेल भी जाना पड़ा। सबसे छोटे पुत्र रामकृष्ण ने कम आयु के होने के कारण गांधीजी द्वारा निषेध किये जाने पर भी सत्याग्रह में भाग लिया और उन्हें 1941–42 में जेल जाना पड़ा। स्वयं जानकीदेवी भी जेल गयीं, उन्हें पुलिस की यातनाओं को भी सहन करना पड़ा। पुत्र–पुत्रियों के विवाह बहुत ही सादगी, खादी के कपड़ों में, बिना कुछ दिये–लिए हुए।

उनमें ख्याति की आकांक्षा भी नहीं थी। भारत सरकार ने त्याग, समर्पण और देश भक्ति के लिए 1956 में उन्हें पद्मविभूषण से सम्मानित किया और देश के तत्कालीन राष्ट्रपति डा0 राजेन्द्र प्रसाद द्वारा उन्हें यह सम्मान प्रदान किया गया।

अपने जीवन के अंतिम क्षणों में भी उन्होंने विनोबाजी द्वारा प्रारंभ किये गए गो–हत्या के विरुद्ध आंदोलन में भी पूर्ण सक्रियता के साथ भाग लिया। वह आजीवन अखिल भारतीय गो सेवा संघ की अध्यक्ष रहीं। दिनांक 21 मई 1979 को इस राष्ट्रभक्त, गोभक्त, समाजसुधारक और सादगी की मूर्ति महिला का वर्धा में देहान्त हो गया। उनकी अंतिम इच्छा थी कि वर्धा में जहां उनके पति की अस्थियां जिस पेड़ के नीचे डाली गई हैं वहीं उनकी भी अस्थियां विसर्जित की जायें। इसके पीछे उनका यह भाव रहा कि शरीर मिट्टी का है, उसे मिट्टी में ही मिलना चाहिए।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

- **कार्यक्रम विषय** : अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस
- **दिनांक** : 21 जून 2015
- **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित, सिलाई केन्द्र एवं ग्रामीण सिलाई केंद्र लाछपुर

प्रथम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 'शब्दम्' संस्था ने 'शब्दम् सिलाई केन्द्र' की तीनों शाखाओं में 'योग शिक्षा' नामक कार्यक्रम किया। इसके अन्तर्गत सिलाई प्रशिक्षण लेने आ रही छात्राओं को योग का अभ्यास कराया गया, 'शारीरिक एवं मानसिक तौर पर व्यक्ति के लिए योग क्यों आवश्यक है' विषय पर एक वार्ता भी की गई कार्यक्रम समाप्ति से पूर्व सभी छात्राओं को हिन्द परिसर में हो रहे योग शिविर की जानकारी दी गई तथा सभी से अपने–अपने गांव, कालौनी, क्षेत्र में आस–पास के लोगों के साथ सामूहिक योग करने की सलाह दी गई।

शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए योग अत्यन्त आवश्यक है। समन्वयक श्री दीपक औहरी ने दैनिक जीवन में योगा के महत्त्व को सभी बालिकाओं को बताते हुए कहा कि '' जीवन में सफलता के लिए स्वस्थ शरीर के साथ–साथ, स्वस्थ मस्तिक होना भी आवश्यक है।'' अतः योग बहुत ही लाभप्रद है।

बालिकाओं ने 'शब्दम्' के द्वारा ओ३म् के महत्त्व को जाना। बालिकाओं ने पूर्ण उत्साह के साथ अनुलोम –विलोम, कपाल भाति जैसे आसनों को सफलता पूर्वक किया।

इस प्रकार यह योग दिवस बडे ही उल्लास के साथ आध्यात्मिक तरीके से शब्दम् द्वारा मनाया गया।

ग्रामीण सिलाई केन्द्र में योग की महत्ता बताते दीपक औहरी

योग करतीं बुजुर्ग महिला।

सम्मान

प्रो. नन्दलाल पाठक

महाराष्ट्र सरकार द्वारा 'महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी' के कार्याध्यक्ष के रूप में आपको तीन वर्ष के लिए नियुक्त किया गया है।

(कार्यकाल– 2015 से 2018 तक, तीन वर्ष के लिए)

डॉ. महेश आलोक

माननीय राज्यपाल उ.प्र. शासन द्वारा उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ, उ.प्र. सरकार की सर्वोच्च सभा एवं कार्यकारिणी समिति का मानद सदस्य मनोनीत किया गया है।

(कार्यकाल– 2015 से 2018 तक, तीन वर्ष के लिए)

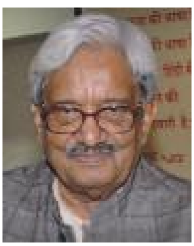

श्री उदयप्रताप सिंह

प्रख्यात कवि उदयप्रताप सिंह वर्तमान में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष हैं। आप लोकसभा, राज्यसभा एवं राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के सम्मानित सदस्य रहे हैं। वर्ष 2015 में आपको विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिसमें प्रमुख है– उत्तर प्रदेश सरकार का 'साहित्य शिरोमणि', आगरा विश्वविद्यालय का एलुमिनाई पुरस्कार, जागृत मतदाता मंच, बनारस द्वारा राजनैतिक एवं नागरिक जीवन में शुचिता के लिऐ 'द कैरेक्टर ट्री' सम्मान।

हिन्दी भाषा भूषण

श्री अरविन्द तिवारी

हिन्दी दिवस 14 सितम्बर 2015 को साहित्य मण्डल श्री नाथद्वारा के तत्त्वावधान में 'हिन्दी लाओ देश बचाओ' समारोह के अवसरपर विशिष्ट हिन्दी सेवी के रूप में अरविन्द तिवारी को 'साहित्य भूषण' की उपाधि के साथ सम्मानित किया गया। उन्हें सम्मान पत्र, श्रीफल एवं शाल के साथ सम्मान राशि भी प्रदान की गई। राजस्थान के श्रीनाथ द्वारा के इस कार्यक्रम में पूरे देश के साहित्यकारों ने भाग लिया।

> “ यदि आप अपने लेखन के द्वारा साँस न लेते हों,
> अपने लेखन में रुदन नहीं करते हों,
> या गाते न हों, तो लेखन छोड़ दें।
> क्योंकि हमारी संस्कृति के लिए वह अनुपयोगी है। ”
>
> –अज्ञात

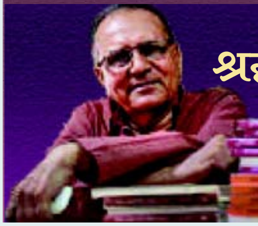

श्रद्धासुमन

७ जनवरी २०१६ को हिंदी के शीर्षस्थ कहानीकार, उपन्यासकार, व्यंग्यकार तथा संपादक श्री रवींद्र कालिया का दुखद निधन हो गया। श्रद्धांजलि के रूप में प्रस्तुत है उनके अभिन्न यश मालवीय का 'नवनीत' में प्रकाशित लेख।

अपनी कहानी के किरदार जैसे ही थे रवींद्र कालिया

कथाकार रवींद्र कालिया की जिंदगी अपने आप में एक भरी–पूरी कहानी जैसे ही रही. उनका न रहना एक संवेदनशील कहानी के खो जाने जैसा ही है. वह अदभुत किस्सागो थे. हमारे समय का बड़ा कथाकार खामोश हो गया. उन्हें जानना अपने समय को ही जानने जैसा रहा है. उनकी कालजयी कहानी 'नौ साल छोटी पत्नी' हिंदी की नयी कहानी का एक महत्वपूर्ण मोड़ है. जालंधर से दिल्ली, दिल्ली से बम्बई, बम्बई से इलाहबाद, इलाहबाद से कोलकाता, कोलकाता से फिर दिल्ली, जीवनपर्यंत वह साहित्यक पत्रकारिता की अलख जगाते यायावरी करते रहे, कहानी की कीर्ति ध्वजा फहराते रहे. इस लिहाज से उन्हें हिंदी कहानी का राहुल सांकृत्यायन भी कहा जा सकता है.

जिस भी सभा–गोष्ठी में वह होते थे, एक त्यौहार–सा साकार हो उठता था. मेरे सामने कथापत्रिका 'सारिका' का उन्यास सम्राट अमृतलाल नागर के साक्षात्कार वाला वह पृष्ठ खुला हुआ है, जिसपर साम्प्रदायिकता विरोध पर लिखे, दो खण्डों में प्रकाशित उनके उपन्यास 'खुदा सही सलामत है' की उन्होंने मुक्तकंठ से चर्चा की है, नागर जी कहते हैं, ऐसा अद्‌भुत कथारस और भाषा का ऐसा खिलंदड़ापन तो रवींद्र कालिया के अन्य किसी समकालीन के पास है ही नहीं. कालिया अपने लिखे को रेशा–रेशा एन्जॉय करते हैं साथ ही अपने सरोकारों की डोर भी ढीली नहीं पड़ने देते,

एक लम्बा समय इलाहबाद स्थित मेंहदौरी कॉलोनी में उन्होंने जिया. इस तरह वह मेरे अन्यतम पड़ोसी, बड़े भाई जैसे रहे. पिछवाड़े रसूलाबाद घाट पर गंगा तक टहलने सुबह–शाम कई वर्षों तक उनके साथ जाने का अवसर मिलता रहा. उनके भीतर हर वक्त एक कहानी सांस लेती होती थी. उन्होंने लेखक की दीन–हीन और निरीह प्राणी की इमेज को बखूबी तोड़ा, बल्कि उसे अपने सम्पादन काल में एक स्टार की तरह प्रस्तुत किया. अखिलेश हों या बद्रीनारायण, धीरेंद्र अस्थाना हों या बोधिसत्व, इन सभी की रचनात्मकता को पहले पहल कालिया जी ने पहचाना था. वह नये और पुराने के बीच कसे 'रवींद्र सेतु' जैसे ही लगते थे. हमेशा नयी रचनाशीलता को रेखांकित करते रहे. वह कहानी के गुरू के रूप में मोहन राकेश और सम्पादन के गुरू के रूप में धर्मवीर भारती को अपना आदर्श मानते रहे.

मधुर स्मृति: श्रीमती किरण बजाज, डॉ. शशिकान्त, श्री बालकृष्ण गुप्त, श्री रवीन्द्र कालिया, श्रीमती ममता कालिया, श्री अखिलेश, डॉ. हरिमोहन सिंह शब्दम के द्वितीय स्थापना दिवस समारोह में।

उनके संस्मरणों की किताब 'गालिब छुटी शराब' तो उनका एक और अन्य शिखर पड़ाव है. उसके फ्लैप पर तमाम बड़े साहित्यकारों के कमेंट्स के साथ, मुझ जैसे नये लेखक के एक शरारती कमेंट को भी उन्होंने स्थान दिया था. हिंदी में ऐसा शरारती गद्य अन्यत्र दुर्लभ है. अपने पर प्रहार करना, बेबाकी से बात कहना, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' की आत्मकथा 'अपनी खबर' में मिलता है या फिर 'गालिब छुटी शराब' में. इस संस्मरण के 'हंस' में धारावाहिक प्रकाशन के क्रम में एक बार राजेंद्र यादव से उनके कार्यालय में भेंट हुई थी, बड़े मज़े से सिगार पीते हुए कह रहे थे–'कालिया के संस्मरणों ने तो हंस का सर्कुलेश ही बढ़ा दिया है, लोग फोटो कॉपी से भी काम चला रहे हैं.

साहित्य की दुनिया में ऐसी 'कलरफुल पर्सनाल्टी' मुश्किल से देखने को मिलती है, रवींद्र कालिया इसके जीवंत अपवाद थे.

मैंने बातूनी व्यक्ति से मौन सीखा,
असहिष्णु से सहिष्णुता और
निर्दय व्यक्ति से सीखी दया।
लेकिन आश्चर्य! इन सभी शिक्षकों के
प्रति मैं कृतज्ञहीन हूँ।

—खलील जिब्रान